वर्ष : ५ अंक : २६ सितम्बर-अक्तूबर १९९४

ऋषि प्रसाद

द्विमासिक

मैं नहीं माखन खायो
मैया मोरी... मैं नहीं माखन खायो...

जिज्ञासुओं में आत्म-मस्ती का खजाना लुटाते हुए पूज्य संत श्री आसारामजी बापू एवं पूज्य अखण्डानन्द सरस्वतीजी महाराज। (कुछ वर्ष पूर्व अहमदाबाद आश्रम में)
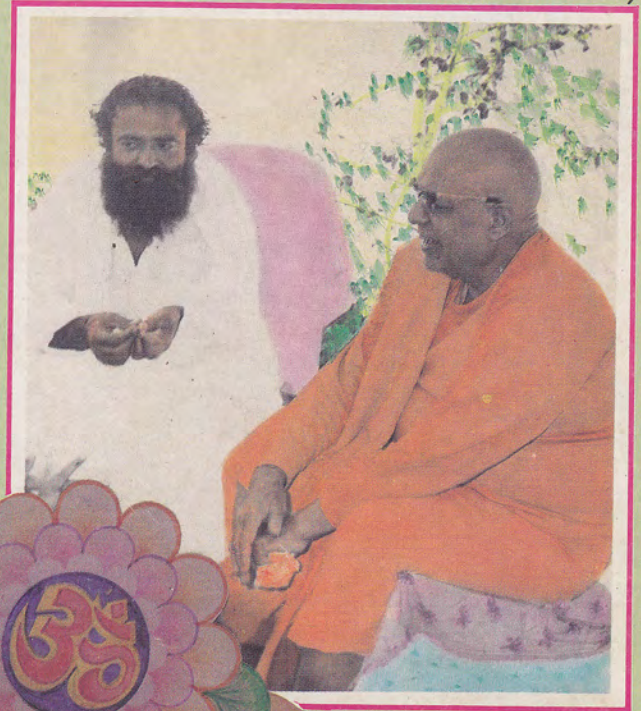
भाई तो हमारी
लौकिक संपत्ति का रक्षण
करता है किन्तु संतजन व गुरुजन हमारे
आध्यात्मिक खजाने का संरक्षण करते हैं।

वर्ष : ५
अंक : २६
सितम्बर-अक्तूबर १९९४

सम्पादक : के. आर. पटेल

शुल्क वार्षिक : रू. २५
आजीवन : रू. २५०/-
परदेश में वार्षिक : US $ 15 (डॉलर)
आजीवन : US $ 150 (डॉलर)

कार्यालय
'ऋषि प्रसाद'
श्री योग वेदान्त सेवा समिति
संत श्री आसारामजी आश्रम
साबरमती, अहमदाबाद-३८० ००५
फोन : ४८६३१०, ४८६७०२.

परदेश में शुल्क भरने का पता :
International Yoga Vedanta Seva Samiti
8 Williams Crest,
Park Ridge, N. J. 07656 U.S.A.
Phone : (201) - 930 - 9195

टाईप सेटींग : विनय प्रिन्टींग प्रेस
प्रकाशक और मुद्रक : के. आर. पटेल
श्री योग वेदान्त सेवा समिति,
संत श्री आसारामजी आश्रम, मोटेरा,
साबरमती, अहमदाबाद-३८० ००५.
भार्गवी प्रिन्टर्स, राणीप, अहमदाबाद में
छपाकर प्रकाशित किया ।

❀ 'ऋषि प्रसाद' ❀
हर दूसरे महीने की ९ वीं तारीख को प्रकाशित होता है ।
कार्यालय के साथ पत्रव्यवहार करते समय अपना रसीद क्रमांक एवं स्थायी सदस्य क्रमांक अवश्य बतायें ।

वर्ष : ५

अंक : २६

सितम्बर-अक्तूबर १९९४

सम्पादक : के. आर. पटेल

शुल्क वार्षिक : रू. २५
आजीवन : रू. २५०/-
परदेश में वार्षिक : US $ 15 (डॉलर)
आजीवन : US $ 150 (डॉलर)

कार्यालय
'ऋषि प्रसाद'
श्री योग वेदान्त सेवा समिति
संत श्री आसारामजी आश्रम
साबरमती, अहमदाबाद-३८० ००५
फोन : ४८६३१०, ४८६७०२.

परदेश में शुल्क भरने का पता :
International Yoga Vedanta Seva Samiti
8 Williams Crest,
Park Ridge, N. J. 07656 U.S.A.
Phone : (201) - 930 - 9195

टाईप सेटींग : विनय प्रिन्टींग प्रेस
प्रकाशक और मुद्रक : के. आर. पटेल
श्री योग वेदान्त सेवा समिति,
संत श्री आसारामजी आश्रम, मोटेरा,
साबरमती, अहमदाबाद-३८० ००५.
भार्गवी प्रिन्टर्स, राणीप, अहमदाबाद में
छपाकर प्रकाशित किया ।

❀ 'ऋषि प्रसाद' ❀
हर दूसरे महीने की ९ वीं तारीख को प्रकाशित होता है ।
कार्यालय के साथ पत्रव्यवहार करते समय अपना रसीद क्रमांक एवं स्थायी सदस्य क्रमांक अवश्य बतायें ।

॥ अभिनन्दनकुसुमांजलिः ॥

आसारामः कलिमलहरः कान्तमूर्तिः सुशीलो
देशे देशे भ्रमति सततं लोककल्याणदृष्ट्या ।
आत्मारामः परहितमतिः स्वोपदेशान् ददानो
धन्यो भूमौ नव इव शुकः सर्वदोदारचेताः ॥१॥

कथाभिर्वार्ताभिः सरसपदमुक्ताभिरनिशं
जनानन्तस्तप्तान् सुखयतुमुपेतः खलु भुवि ।
शुको वा व्यासो वा प्रवचनपटुः शास्त्रविभवः
सुधी आसारामः सजयति धरामौक्तिकमणिः ॥२॥

सर्वे जनास्त्वद्गुणराशिदासा
ज्ञानप्रभाभासित पूर्णदेहाः ।
सत्स्वार्थलाभैः परितुष्टचित्ता
भक्त्या स्तुवन्तीह दिने दिने त्वाम् ॥३॥

धन्यो भवान् भूतलरत्नभूतो
मान्यावुभौ ते पितरौ च धन्यौ ।
धन्या च सा प्राक्तनसिन्धुभूमि-
र्धन्या वयं भक्तजनास्त्वदीयाः ॥४॥

सर्वोपकाराय जनुस्त्वदीयं
स्वार्थं न तत्र प्रतिभाति किंचित् ।
सन्तः सुगावस्सरितश्च वृक्षा
गृह्णन्ति जन्मानि परार्थमेव ॥५॥

गंगाप्रवाहोपमशान्तिदात्री
स्वच्छा सुशीताऽखिलतापहन्त्री ।
भवन्मुखाम्भोजपथप्रवृत्ता
वाणी समस्तान् पुरुषान् पुनाति ॥६॥

साक्षात् त्वदीयो वचनप्रवाहः
टीवींगतो वा सममेव लोकान् ।
प्रीणाति सद्यो न हि चित्रमेत-
ल्लोकोत्तराणां चरितं विचित्रम् ॥७॥

वेदादि शास्त्रान्वितवाक्यसंघै-
र्युक्तानि वाक्यान्युपदेशकाले ।
पुष्णन्ति चेतांसि सुधामयानि
पुंसां सदा कर्णगतानि नूनम् ॥८॥

श्लोकैः कैश्चित् परमपुरुषं सिन्धुदेशप्रसूतं
पूज्यं मान्यं सकलजनताप्रीणनैकप्रवीणम् ।
आसारामं विनतशिरसा सादरं भक्तियुक्तो
ब्रह्मानन्दोनमति बहुधा काशिकेयः प्रपन्नः ॥९॥

भवच्चरणचंचरीको-
डॉ. ब्रह्मानन्द त्रिपाठी (वाराणसेयः)
के.३०/६, घासी टोला, विश्वेश्वरगंज, जि. वाराणसी (उ.प्र.)

कलियुग के मनुष्यों के पापों का विनाश करनेवाले, सौम्यमूर्ति, सुशील परम संत श्री आसारामजी महाराज लोककल्याण की भावना से सदा देश-विदेश में भ्रमण करते रहते हैं । आप सदैव परोपकार की दृष्टि से शास्त्रीय सदुपदेशों को देते समय व्यासपीठ पर बैठे हुए अभिनव शुकदेव की भाँति देखे जाते हैं । (१)

संत श्री आसारामजी महाराज भूलोक में भास्वर मणि के समान देदीप्यमान हो रहे हैं, जो धार्मिक प्रवचनों के बहाने से भवबाधा से पीड़ित मानवों के हृदयों को शांति प्रदान करते समय ऐसे लगते हैं मानो ये शुकदेवजी या साक्षात् वेदव्यासजी हों । (२)

'इस बम्बई के प्रांगण में आपके सद्गुणों से यहाँ

के निवासी आपके दास (भक्त) हो गये हैं, अतएव उन्हें आपने अपने ज्ञान से पवित्र कर दिया है। वे आपके उपदेशों से प्रसन्न होकर प्रतिदिन आपकी स्तुति करते रहते हैं। (३)

अतः भूतल के रत्न स्वरूप आप धन्य हैं, आपके माता-पिता धन्य हैं। वह सिन्ध देश धन्य है जहाँ आपका जन्म हुआ है और आपके भक्तजन हम भी धन्य हैं। (४)

आपका यह शरीर सबका उपकार करनेवाला है। इसमें आपका कोई स्वार्थ नहीं है, क्योंकि संत, गायें, नदियाँ तथा वृक्ष, इनका जन्म परोपकार के लिये ही होता है। (५)

गंगा-प्रवाह के समान शांति देनेवाली, स्वच्छ, शीतल तथा सबके हृदयों के संताप को दूर करनेवाली, आपके मुखारविन्द से निकली हुई अमर वाणी जनता को पवित्र करती रहती है। (६)

आपके सदुपदेश साक्षात् रूप में अथवा टी. वी. में समान रूप से भक्तजन-समूह को आकृष्ट करते रहते हैं, क्योंकि संत-महात्माओं के लोकोत्तर चरित्र विलक्षण होते हैं। (७)

आपके अमृतोपम उपदेशों में वेद, उपनिषद्, धर्मशास्त्र, पुराण आदि के वचन जनता के मनमंदिरों में श्रद्धा का संचार सदा किया करते हैं। (८)

इस प्रकार इन कतिपय पद्यों द्वारा सिन्ध देश के सपूत संतशिरोमणि श्री आसारामजी महाराज के चरित्रों का वर्णन कर शरण में आया हुआ वाराणसी निवासी ब्रह्मानन्द त्रिपाठी आपको बार-बार प्रणाम करता है। (९)

महिमा 'ऋषि प्रसाद' की....

सब प्रसादों का है एक 'ऋषि प्रसाद'।
छाया है इसमें सत्संगों का मधुर आस्वाद ॥

संतश्री की है इसमें अमृतवाणी।
इसको हृदय में बसा लो प्राणी ॥
भवसागर से हो जायेंगे पार।
मिट जायगा मिथ्याचार ॥

जन्म-मृत्यु के भवबंधन नहीं सतायेंगे।
जब 'ऋषि प्रसाद' के वचनों को अपनायेंगे ॥

काम क्रोध मद लोभ व्यभिचार।
छूमंतर हो जायेंगे ये कुविचार ॥
दिव्य ज्योति की मिलेगी रोशनी।
धन्य हो जायेगी ये मानव योनि ॥

सुख-दुःख है अपने कर्मों का लेखा।
माया-मोह से सबने खाया धोखा ॥
कोई किसीका नहीं इस संसार में।
जीवन अर्पण कर दो प्रभु-प्यार में ॥

- अशोककुमार गुप्ता 'शिक्षक'
ब्यावरा, जि. राजगढ़ (म.प्र.)

गुरुभक्तियोग

(१) गुरु में अखण्ड श्रद्धा गुरुभक्तियोग रूपी वृक्ष का मूल है। (२) उत्तरोत्तर वर्धमान भक्ति-भावना, नम्रता, आज्ञापालन आदि इस वृक्ष की शाखाएँ हैं। सेवा फूल है। गुरु को आत्मसमर्पण करना अमर फल है। (३) अगर आपको गुरु के जीवनदायक चरणों में दृढ़ श्रद्धा एवं भक्तिभाव हो तो आपको गुरुभक्तियोग के अभ्यास में सफलता अवश्य मिलेगी। (४) सच्चे हृदयपूर्वक गुरु की शरण में जाना ही गुरुभक्तियोग का सार है। (५) गुरुभक्तियोग का अभ्यास माने गुरु के प्रति शुद्ध उत्कट प्रेम। (६) ईमानदारी के सिवाय गुरुभक्तियोग में बिल्कुल प्रगति नहीं हो सकती।

रक्षाबंधन

(२१ अगस्त, १९९४)
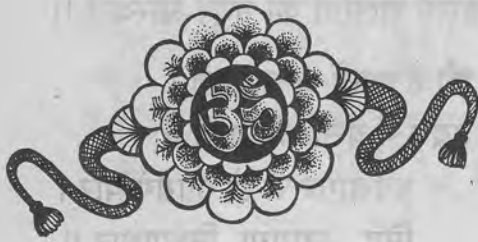
हमारी भारतीय संस्कृति त्याग और सेवा की नींव पर खड़ी होकर पर्व रूपी पुष्पों की माला से सुसज्ज है। इस माला का एक पुष्प रक्षाबंधन का पर्व भी है जो गुरुपूनम (व्यासपूर्णिमा) के बाद आता है।

यूँ तो रक्षाबंधन भाई-बहन का त्यौहार है। भाई-बहन के बीच प्रेमतंतु को निभाने के वचन देने का दिन है, अपने विकारों पर विजय पाने का, विकारों पर प्रतिबंध लगाने का दिन है, एवं बहन के लिए अपने भाई के द्वारा संरक्षण पाने का दिन है लेकिन विशाल अर्थ में आज का दिन शुभ संकल्प करने का दिन है, परमात्मा के सान्निध्य का अनुभव करने का दिन है, ऋषियों को प्रणाम करने का दिन है।

भाई तो हमारी लौकिक संपत्ति का रक्षण करते हैं किन्तु संतजन व गुरुजन तो हमारे आध्यात्मिक खजाने का संरक्षण करते हैं।

उत्तम साधक बाह्य चमत्कारों से प्रभावित होकर नहीं अपितु अपने दिल की शांति और आनंद के अनुभव से ही गुरुओं को मानते हैं। साधक को जो आध्यात्मिक संस्कार का खजाना मिला है वह कहीं बिखर न जाये, काम, क्रोध, लोभ आदि लुटेरे कहीं उसे लूट न लें इसलिए साधक गुरुओं से रक्षा चाहता है। उस रक्षा की याद ताजा करने का दिन है रक्षाबंधन पर्व।

भाई तो हमारी लौकिक संपत्ति का रक्षण करते हैं किन्तु संतजन व गुरुजन तो हमारे आध्यात्मिक खजाने का संरक्षण करते हैं।

तिलकजी कहते थे : "मनुष्य मात्र को निराशा की खाई से बचाकर प्रेम, उल्लास और आनंद के महासागर में स्नान करवानेवाले जो विविध प्रसंग हैं वे ही हमारी भारतीय संस्कृति में हमारे हिन्दू पर्व हैं।

हे भारतवासियों ! हमारी संस्कृति के अनुरूप हमारे ऋषियों ने जीवन में उल्लास, आनंद, प्रेम, पवित्रता, साहस जैसे सद्गुण बढ़ें, ऐसे पर्वों का आयोजन किया है। अतएव उन्हें उल्लास से मनाओ और भारतीय संस्कृति के प्रणेता ऋषि-मनीषियों के मार्गदर्शन से जीवनदाता का साक्षात्कार करके अपने जीवन को धन्य बना लो।"

तिलकजी ने यह ठीक ही कहा है कि अपने राष्ट्र की नींव धर्म और संस्कृति पर यदि न टिकेगी तो देश में सुख, शांति

और अमन-चमन होना संभव नहीं है ।

तिलकजी एक बार विदेशयात्रा पर थे । वहाँ अकस्मात् उन्हें याद आया कि आज तो रक्षाबंधन है ! बहन की अनुपस्थिति को सोचकर वे कुछ चिन्तित और दुःखी-से हुए । लेकिन उपाय के रूप में उन्होंने वहाँ एक भारतीय परिवार को खोज लिया । उनके घर जाकर एक महिला से निवेदन किया : "बहन ! आज रक्षाबंधन है । तू मेरी धर्म की बहन बन जा । मुझे शुभ कामनाओं का एक छोटा-सा धागा ही बाँध दे, ताकि मुझमें सच्चरित्रता, उत्साह और प्रेम बना रहे ।"

साधक को जो आध्यात्मिक संस्कार का खजाना मिला है वह कहीं बिखर न जाये, काम, क्रोध, लोभ आदि लुटेरे कहीं उसे लूट न लें इसलिए साधक गुरुओं से रक्षा चाहता है ।

वह महिला भी खुश हो गई और बोली : "वाह भैया ! धर्म-भाई के रूप में तुम्हें पाकर तुम्हारी यह बहन तो सचमुच में धन्य हो गई ।"

वह ले आयी धागा और प्रेम से तिलकजी की कलाई पर बाँध दिया । तिलकजी को उस दिन उस बहन के प्रेमपूर्ण आग्रह ने इतना विवश कर दिया कि वे भोजन किये बिना अपनी बहन के घर से विदा ही न हो सके ।

राखी महँगी हो या सस्ती, यह महत्त्वपूर्ण नहीं है लेकिन इस धागे के पीछे जितना अमूल्य निर्दोष प्रेम होता है, जितनी अधिक शुद्ध भावना होती है, जितना पवित्र संकल्प होता है, उतनी रक्षा होती है तथा उतना ही लाभ होता है । जो रक्षा की भावनाएँ धागे के साथ जुड़ी हुई होती हैं, वे अवश्य फलदायी होती हैं, रक्षा करती हैं, इसलिए भी इसे रक्षाबंधन कहते होंगे ।

हमारे ऋषियों ने जीवन में उल्लास, आनंद, प्रेम, पवित्रता, साहस जैसे सद्गुण बढ़ें, ऐसे पर्वों का आयोजन किया है अतएव उन्हें उल्लास से मनाओ ।

राखी का धागा तो २५-५० पैसे का भी हो सकता है किन्तु धागे के साथ जो संकल्प किये जाते हैं वे अंतःकरण को तेजस्वी व पावन बनाते हैं । जैसे-इन्द्र जब तेजोहीन हो गये थे तो शचि ने उनमें प्राणबल भरने के भाव का आरोपण कर दिया कि : "जब तक मेरे हाथ से बँधा हुआ धागा आपके पास रहेगा, आपकी ही विजय होगी, आपकी रक्षा होगी तथा भगवान करेगा कि आपका बाल तक बाँका न होगा ।"

शचि ने इन्द्र को राखी बाँधी तो इन्द्र में प्राणबल का विकास हुआ और इन्द्र ने अमरावती पर विजय प्राप्त की । धागा तो छोटा-सा होता है लेकिन बाँधनेवाले का शुभ संकल्प और बँधवानेवाले का विश्वास काम कर जाता है ।

रानी कर्मावती ने हुमायू को राखी भेजी थी । उसने देखा कि मेरे पति की विजय होना कठिन है तो हुमायू को राखी भेजकर विनती की : "मैं तेरी बहन हूँ और ये तेरे बहनोई हैं ।" अब बहनोई को मारनाँ तो मुश्किल हो जाता है । था तो जरा-सा धागा, लेकिन इसमें भावना कितनी दिव्य होती है कि उसका पति मौत के मुँह में जाते-जाते बच गया ।

कुन्ता ने अभिमन्यु को राखी बाँधी और जब तक राखी का धागा अभिमन्यु की कलाई में बँधा रहा तब तक वह युद्ध में जूझता रहा । पहले धागा टूटा, बाद में अभिमन्यु मरा । उस धागे के पीछे भी तो कोई बड़ा संकल्प ही काम कर रहा था कि जब तक वह बँधा रहा, अभिमन्यु विजेता बना रहा ।

लेकिन यहाँ न तो किसीने कुन्ता से धागा बँधवाया

है, न कर्मावती से बँधवाया है, न ही शचि से, क्योंकि इस सूक्ष्म जगत् में स्थूलता का मूल्य कम होता है । यहाँ सूक्ष्म संकल्प ही एक-दूसरे की रक्षा करने में पर्याप्त होते हैं ।

जो देह में अहंबुद्धि करते हैं, उनको बाह्य धागे की जरूरत पड़ती है, लेकिन जो ब्रह्म में, गुरुतत्त्व अथवा आत्मा में अहंबुद्धि करते हैं, उनके लिये धागा तो दिखने भर के लिये है । लेकिन उनके संकल्प ही एक-दूसरे के लिए काफी होते हैं ।

राखी का धागा तो २५-५० पैसे का भी हो सकता है किन्तु धागे के साथ जो संकल्प किये जाते हैं वे अंतःकरण को तेजस्वी व पावन बनाते हैं ।

राखी का यह धागा तो छोटा-सा होता है लेकिन इस धागे के पीछे कर्त्तव्य का संकेत होता है, एक-दूसरे के प्रति सहानुभूति होती है ।

'भाई छोटी-छोटी बातों के कारण आवेश और आवेग का शिकार न हो जाये, सदैव सम रहे, राखी का यह कच्चा धागा भाई में पक्की समझ जगाने का स्मृतिचिह्न बने' ऐसा मंगल चिंतन करते-करते बहन भाई को राखी बाँधे तथा भाई भी बहन के जीवन में आती व्यावहारिक, सामाजिक एवं मानसिक मुसीबतों को मिटाने के लिए अपनी स्मृति ताजी करे, ऐसा पावन दिन रक्षाबंधन है ।

❀

जन्माष्टमी

(२९ अगस्त, १९९४)

श्रीकृष्ण का सहज जीवन

कर्षति आकर्षति इति कृष्णः ।

श्रीकृष्ण किसी व्यक्ति, देह अथवा आकृति के स्वरूप का नाम नहीं है । कृष्ण का आशय है जो आकर्षित कर दे । आत्मा के आनंद-स्वरूप को ही श्रीकृष्ण का वास्तविक स्वरूप मानना चाहिये ।

बाह्य दृष्टि से जो श्रीकृष्ण दिखाई देते हैं वे तो अपने-आप में पूर्ण हैं ही, उनकी लीलाएँ भी पूर्ण हैं । साथ ही श्रीकृष्ण-तत्त्व को जाननेवाले कबीरजी जैसे संतों की लीलाएँ भी पूर्ण हैं ।

वास्तव में तो तुम भी श्रीकृष्ण और कबीरजी से कम नहीं हो लेकिन तुम अपने को कुछ मान बैठे हो, स्वयं को किसी ढाँचे में ढाल बैठे हो । फलतः कुंठित हो गये हो, इसलिये तुम्हारी शक्तियों का चमत्कार नहीं दिखता । अन्यथा तुममें इतनी शक्ति का खजाना है कि तुम किसीको डूबने से बचाकर किनारे लगा सकते हो, सूखे हुए कुँए में पानी छलका सकते हो ।

तुम स्वयं को देहधारी व सीमित मानते हो । 'इतना मेरा... इतना पराया... यह मेरी जाति... यह मेरा नाम...' बस, यहीं से तुम्हारा दुर्भाग्य शुरू हो जाता है, क्योंकि तुम अपनी गरिमा भूल जाते हो, वासनाओं के पीछे स्वयं को भी दाँव पर लगाकर सहज जीवन से दूर हो जाते हो । किन्तु ज्यों-ज्यों वासनाओं का अन्त होता है, त्यों-त्यों सहजता प्रकट होती जाती है और सहजता के प्राकट्य से वासना पुनः प्रकट नहीं होती है ।

जीवन में त्याग... त्याग... त्याग... या निवृत्ति... निवृत्ति... निवृत्ति... भी नहीं होना चाहिये और केवल भोग भी नहीं होना चाहिए । श्रीकृष्ण का मार्ग त्याग का भी नहीं है और भोग का भी नहीं है । कबीरजी का

मार्ग भी श्रीकृष्ण जैसा है - सहज समाधि का मार्ग। कबीरजी कहते हैं :

साधो ! सहज समाधि भली ।
गुरुकृपा भई जा दिन से,
दिन-दिन अधिक चली ।
आँख न मूँदूँ कान न रूँदूँ
काया कष्ट न धारूँ ।
खुली आँख मैं हँस-हँस देखूँ
सुन्दर रूप निहारूँ ।
साधो ! सहज समाधि भली ।

अपनी जीवनदृष्टि भी ऐसी होनी चाहिये। त्याग भी नहीं, भोग भी नहीं अपितु समग्र जीवन सहज समाधि हो जाय - साधक की यह अभिलाषा होनी चाहिये। इस हेतु प्राणबल, मनोबल, भावबल और ऊँची समझ चाहिये।

तुममें इतनी शक्ति का खजाना है कि तुम किसीको डूबने से बचाकर किनारे लगा सकते हो, सूखे हुए कुँए में पानी छलका सकते हो ।

प्रार्थना और पुकार से भावनाओं का विकास होता है, भावबल बढ़ता है। प्राणायाम से प्राणबल बढ़ता है, सेवा से क्रियाबल बढ़ता है और सत्संग से समझ बढ़ती है। भावबल, प्राणबल और क्रियाबल के विकास एवं ऊँची समझ से सहज समाधि का अपना स्वभाव बन जाता है तथा जीवन चमक उठता है।

प्रार्थना और पुकार से भावनाओं का विकास होता है, प्राणायाम से प्राणबल बढ़ता है, सेवा से क्रियाबल बढ़ता है और सत्संग से समझ बढ़ती है। ऊँची समझ से सहज समाधि अपना स्वभाव बन जाता है ।

श्रीकृष्ण का तो पूरा जीवन मानो सहज समाधि में ही बीता। कभी पूतना आई तो कभी धेनकासुर व बकासुर आए। उनके साथ जूझे भी और ग्वाल-गोपियों के साथ वे नाचे और खेले भी। अर्जुन के साथ श्रीकृष्ण युद्ध के मैदान में उतरे और अक्रूर एवं उद्धवजी से मिलते समय पूरे प्रेम से मिले। जिस समय जो करना पड़ा कर लिया।

मैं चाहता हूँ कि भगवान आप सबके जीवन में भी यह भावना जल्दी से जल्दी पूरी करें ताकि आप सहज समाधि की दशा को पा सको। सहज समाधि तब होगी जब हम लोग जीवन में कभी पीछे न हटेंगे। जिस समय जो कार्य करना पड़े, वह ठीक से करेंगे लेकिन 'मैं कर रहा हूँ' ऐसी कर्तृत्वबुद्धि से नहीं करेंगे अपितु खेल समझकर करेंगे। करने का बोझ नहीं लगे, ऐसा विनोद मात्र समझ कर करेंगे।

यदि सुबह-सुबह आपको कहीं जाता हुआ देखकर कोई पूछे कि : "कहाँ जा रहे हो ? ऑफिस जा रहे हो ?" तब उत्साह से भरे हुए आप कहेंगे : "नहीं - नहीं ! सैर करने जा रहा हूँ, घूमने जा रहा हूँ।"

फिर यदि दस बजे आपको जाता देखकर कोई पूछे कि : "कहीं बाहर जा रहे हो ? सैर करने जा रहे हो ?" तब आप उदास या बोझिल स्वर में कहेंगे : "नहीं यार ! ऑफिस जा रहा हूँ।" अथवा "दुकान जा रहा हूँ।"

सड़क वही की वही है और आप भी वही हैं लेकिन आपका संगीत छिन गया है, जीवन बोझिल हो गया है जो कि अनुचित है। उचित तो यह है कि प्रत्येक कार्य हम खेल समझकर करें।

ऐसा नहीं है कि श्रीकृष्ण ने कुछ नहीं किया था और संत लोग कुछ नहीं करते हैं। हकीकत में देखा जाए तो वे लोग बहुत कुछ

करते हैं लेकिन उनमें कर्त्तृत्व का बोझा नहीं होता है । अतः उनके द्वारा किया गया प्रत्येक कार्य उत्कृष्ट व यथार्थ होता है और हम तो थोड़ा-सा भी काम करते हैं तो बोझिल हो जाते हैं, अहंकार से भर जाते हैं ।

आज अहंकार से हम इतने बोझिल हो गये हैं कि हम हँसते हैं तो भी बोझिल होकर, रोते हैं तो भी बोझिल होकर, नाचते हैं तो भी बोझिल होकर । सच पूछो तो हमारा नृत्य ही खो गया है, मस्ती खो गई है, हास्य खो गया है । इस कारण से सहज जीवन से हम दूर हो गये हैं। कोई सुधरे हुए लोग नाचते हुए दिखाई भी पड़ते हैं तो क्लबों की दासता और विकारों की गंदी व्यवस्था में अधिकाधिक विक्षिप्त होते जा रहे हैं । मीरा जैसी मस्ती, गौरांग जैसा आत्मगौरव, श्रीकृष्ण-तत्त्व में मस्त संत कँवरराम जैसा निर्दोष निर्विकारी नृत्य अपने जीवन में लाओ । जो होगा, देखा जाएगा । आज... अभी से ही सत्य स्वरूप ईश्वर में, आत्मा में, परमेश्वरीय स्वभाव में गोता मारकर गुनगुनाओ । अपनी सोहं स्वरूप की मस्ती में छोड़ दो कल की चिन्ता । परे फेंको प्रतिष्ठा और पदवी के अहं को । हो जाओ निर्दोष नारायण के 'कर्षति आकर्षति' स्वभाव के साथ... सहज सुख-स्वरूप...

ॐ शांतिः ! ॐ आनन्द !! ॐ माधुर्य !!!

हमारा जीवन सहज नहीं है इसलिए जीवन में परिस्थितियों का बहुत प्रभाव पड़ता है । इसके विपरीत, जिन संतों का जीवन सहज है, उनके जीवन में परिस्थितियों का कभी प्रभाव नहीं पड़ता । अपितु संत जहाँ जाते हैं वहाँ की परिस्थितियों पर संतों का प्रभाव पड़ता है ।

आप भी संत-भगवन्त की तरह सहज जीवन जीने का संकल्प कीजिए । ऐसा नहीं कि श्रीकृष्ण की तरह तुम बँसी बजाते हुए गायों के पीछे घूमने लग जाओ । ... नहीं, मकान-दुकान संभालो, गृहस्थ जीवन जियो लेकिन भीतर से तुम ऐसे रहो कि जीवन बोझा न बने, अपितु आनन्दमय बन जाए । श्री अर भगतजी ने कहा है :

राज्य करे रमणी रमे, के ओढ़े मृगछाल
जो करे सो सहज में, सो साहिब का लाल

❀

श्री तुलसीदासजी महाराज की जयंति

(१२ अगस्त, १९९४)

जब मध्यकालीन भारत की स्थिति बड़ी विषम थी विधर्मियों का बोलबाला बढ़ गया था, वेद, शास्त्र आदि सद्ग्रंथ जलाये जा रहे थे, सभी धर्मप्रेमी निराश-से हो रहे थे तभी भगवत्कृपा से रामानंदजी महाराज के संप्रदाय में महान् संत श्री तुलसीदास जी महाराज का प्रादुर्भाव हुआ था ।

उनके जीवन काल में अनेकों चमत्कार हुआ करते थे । उनको श्री हनुमानजी एवं भगवान शंकरजी के साक्षात् दर्शन हुए थे एवं उनसे वार्तालाप भी हुआ था ।

अपने जीवनकाल में उन्होंने कई तपस्याएँ की, कई चमत्कार आदि किये एवं पूरे भारतवर्ष में घूम-घूमकर सत्संग-अमृत की वर्षा करते-करते हजारों-

हजारों लोगों को भगवान का भक्त बनाया था।

उनके जीवनकाल की एक घटना है।

अनेक प्राणियों का उद्धार करते हुए एकबार तुलसीदासजी अपने पिताश्री के गाँव गये। उस समय उनकी ख्याति दूर-सुदूर तक फैल चुकी थी। असंख्य लोगों के शारीरिक-मानसिक कष्टों-पीड़ाओं का निवारण उनके द्वारा होता था। भक्तों की भक्ति एवं संतों में ज्ञानगोष्ठी का प्रसाद बँटता था। गाँव में उनको आते देखकर उनकी महानता एवं ऊँचाई को न समझनेवाले अज्ञानी 'बेचारे' ग्रामजनों ने कहा : "अरे! अरे! ये तुलसिया आया है तुलसिया! क्यों रे तुलसिया! आ गया ?"..... घर में पहुँचे तो परिवार वालों ने उनसे बर्तन आदि मँजवाये, घर का काम आदि करवाया एवं उन्हें सामान्य व्यक्ति की तरह ही समझने लगे। यह देखकर तुलसीदासजी ने कहा कि :

तुलसी कबहुँ न जाइयो अपने बाप के गाँव।
दास गयो तुलसी गयो रह्यो तुलसियो नाम॥

जिन्होंने संत श्री तुलसीदासजी महाराज की महिमा को न समझा वे लोग उनके व्यावहारिक और आध्यात्मिक लाभ से वंचित् रह गये। लेकिन जिन्होंने उनको जाना, पहचाना उनको अमाप लाभ मिला तथा वे ज्ञान-भक्ति के रस को पाकर धन्य हो गये। सारे संसार को रामायण का ग्रंथ देनेवाले श्री तुलसीदासजी धन्य हैं! आज भी रामायण का पठन-चिंतन करके कई साधु-संत एवं भक्त ही नहीं, विदेशी भी धन्यता का अनुभव करते हैं। उन विदेशियों के असंख्य उदाहरणों में से सिर्फ दो-तीन उदाहरण यहाँ अति संक्षेप में देखें।

(१) तुलसीदासजी की महानता एवं उनके चिरस्थायी प्रभाव को देखकर उनपर 'स्केच ऑफ द रिलीजस सेक्ट्स आफ द हिन्दूज' शीर्षक से लेख लिखनेवाले विदेशी होनेन्स हेमन विल्सन।

(२) फ्रेंच भाषा में 'तुलसीचरित्र' के लेखक गार्सा द तासी (फ्रांस)

(३) तुलसीदासजी की रामकथा को स्वीकार करके रूस के उतरी भू-भाग साइबेरिया तक फैलानेवाला 'सोवियत संघ'

दिनांक : १२-८-९४ को तुलसीदासजी की जयंति पर हम उनको प्रणाम करते हैं।

तुलसीदासजी जैसे महापुरुष जब तक विद्यमान थे तब तक लोग उनको न पहचान सके... इस जगत् की रीत ही कुछ विचित्र है।

धन्य है उन लोगों को कि जो विद्यमान महापुरुषों में अडिग श्रद्धा रखकर आध्यात्मिक यात्रा करते रहते हैं।

नागपंचमी

(२६ अगस्त, १९९४)
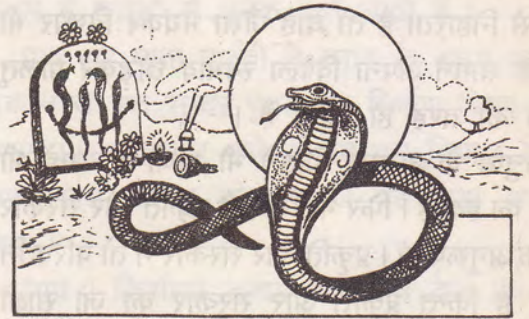
नागपंचमी के दिन नागों की पूजा की जाती है। सर्पदंश के भय से बचने के लिए लोग नाग का पूजन करते हैं, सर्प में परमात्म-भाव से भी पूजन करते हैं अथवा नागजाति के सम्मान में यह उत्सव किया जाता है ऐसा भी माना जा सकता है।

जन्मेजय के पिता परीक्षित की मृत्यु सर्प-दंश से हुई थी, यह जानकर जन्मेजय पूरी नाग-जाति के प्रति क्रुद्ध हो उठे और उन्होंने नाग-यज्ञ आरंभ किया। कई नागों की आहूति दिये जाने पर आस्तीक ऋषि ने जन्मेजय को समझाया और उन्हें नाग-यज्ञ

करने से रोका । आस्तीक ऋषि के उपदेश से उनका चित्त शांत हुआ । इसलिए भी शायद नागपंचमी का पर्व मनाया जाता है ।

भगवान श्रीकृष्ण ने इसी दिन कालियमर्दन किया था अतः नागपूजा का उत्सव चलता होगा, ऐसा भी लोगों का कहना है ।

वासुकी एवं शेषनाग ने अपने आत्मदेव को जाना था । शायद इसीलिए नागपंचमी के दिन सर्पजाति की पूजा की जाती होगी, ऐसा भी विद्वानों का मानना है ।

नागपंचमी मनाने का कारण चाहे जो भी हो किन्तु यह बात तो निश्चित है कि हमारी संस्कृति हिंसक प्राणियों के प्रति भी वैर वृत्ति न रखने की, उनके प्रति सद्भाव जगाने की और उन्हें अभयदान देने की ओर संकेत करती है । नागों को दूध पिलाने की एवं उनमें भी अपने परमात्मा को निहारने की दृष्टि देना, यह सनातन धर्म की विशेषता है ।

भगवान शिव के गले में सर्प, भगवान गणेश की कमर में सर्प एवं भगवान विष्णु की शैया के शेषनाग इसी बात का प्रमाण है कि अगर कोई नागदेव को भी अपने ही आत्मदेव की सत्ता से चलनेवाला मानकर प्रेम से निहारता है तो चाहे जैसा भयंकर विषधर भी उसके सामने अपना विषैला स्वभाव छोड़कर पालतू प्राणी की तरह हो जाता है ।

मनुष्य के अलावा जितने भी प्राणी हैं, उन्हें भी जीने का हक है । फिर भले उनकी प्रकृति और संस्कार उनके अनुरूप हों । प्रकृति और संस्कार में तो परिवर्तन होता है किन्तु प्रकृत्ति और संस्कार का जो साक्षी है उसे निहारकर जो अपने आत्मा - परमात्मा में जाग जाता है वह नारायण का प्रिय हो जाता है, निर्भय स्वरूप में प्रतिष्ठित हो जाता है ।

हे बहादुर ! हिंमत कर । सहासी बन ।

नाऽयमात्मा बलहीनेन लभ्यः ।

बलहीन को आत्मा-परमात्मा की प्राप्ति नहीं होती । बलवान बनो । वीर्यवान बनो । न गुंडा बनो न गुंडागर्दी चलने दो । न दुष्ट बनो, न दुष्टों के आगे घुटने टेको । यह भारतीय संस्कृति की विशेषता है ।

❀

वराहजयंति

(८ सितम्बर, १९९४)

जब पहले कल्प का अन्त हुआ तो पृथ्वी रसातल में चली गयी थी । दूसरे कल्प के आरंभ में भगवान विष्णु ने वराह (शूकर) का रूप धारण करके पृथ्वी को रसातल से निकाला था । उनका यही अवतार वराह अवतार कहलाता है ।

कल्प के अन्त में सोकर उठने पर ब्रह्माजी ने देखा कि पृथ्वी समुद्र में डूब गयी है । अब उसका उद्धार कैसे हो ? इस प्रकार का विचार करके वे श्रीहरि का चिंतन करने लगे ।

ब्रह्माजी इस प्रकार का चिंतन कर ही रहे थे कि इतने में उनके नासापुट से अकस्मात् अँगूठे के बराबर आकार का एक वराह शिशु निकला । देखते-ही-देखते वह वराह शिशु एक विशाल पर्वताकार में परिवर्तित हो गया । तब मुनीश्वरों ने उनकी वेदों के पवित्र मंत्रों से स्तुति की । उसे सुनकर भगवान बड़े प्रसन्न हुए एवं लीला करते हुए जल में प्रविष्ट हो गये ।

भगवान को रसातल में आया देख पृथ्वी देवी ने बड़े भक्ति-भाव से विनम्र होकर प्रभु की स्तुति की । उनकी स्तुति से प्रसन्न होकर वराह भगवान ने उन्हें अपनी दाढ़ों पर उठा लिया और रसातल से ऊपर की ओर उठे ।

इधर कश्यप-दिति का पुत्र एवं हिरण्यकशिपु का

भाई हिरण्याक्ष युद्ध की इच्छा से समुद्र में पाताल लोक के स्वामी वरूण के पास पहुँचा और कहने लगा : "महाराज ! आप मुझे युद्ध की भिक्षा दीजिए ।"

तब भगवान वरूण बोले : "भाई ! हम तो अब युद्धादि के काबिल नहीं रह गये हैं । भगवान नारायण के सिवा हमें और कोई ऐसा दिखता भी नहीं जो तुम जैसे रणकुशल वीर को युद्ध में संतुष्ट कर सके । दैत्यराज ! तुम उन्हीं के पास जाओ । वे ही तुम्हारी कामना पूरी करेंगे ।"

यह सुनकर हिरण्याक्ष बड़ा प्रसन्न हुआ एवं नारदजी से श्रीहरि का पता लगाकर रसातल में पहुँच गया । वहाँ उसने विश्वविजयी वराह भगवान को अपनी दाढ़ों की नोंक पर पृथ्वी को ऊपर की ओर ले जाते हुए देखा ।

जल से बाहर आते समय उनके मार्ग में विघ्न डालने के लिए महापराक्रमी दैत्य हिरण्याक्ष ने जल के भीतर ही उन पर गदाप्रहार किया । इससे उनका क्रोध चक्र के समान तीक्ष्ण हो गया । उन्होंने लीला से ही उसे मार डाला, जैसे सिंह हाथी को मार डालता है । फिर वे पृथ्वी को लेकर जल से बाहर निकले ।

उन्हें बाहर आया देखकर ब्रह्मा, मरीचि आदि ने उनकी स्तुति की एवं प्रार्थना की : "भगवन् ! चराचर जीवों के सुखपूर्वक रहने के लिए आप पृथ्वी माता को जल पर स्थापित कीजिए ।"

उन ब्रह्मवादी मुनियों द्वारा इस प्रकार प्रार्थना किये जाने पर सबकी रक्षा करनेवाले भगवान वराह ने अपने खुरों से जल को स्तम्भित कर उस पर पृथ्वी को स्थापित कर दिया और स्वयं अन्तर्धान हो गये । इस प्रकार पृथ्वी का उद्धार करने के हेतु से ही भगवान ने वराह अवतार धारण किया था ।

('श्री भागवत-सुधा-सागर' पर आधारित)

हरेक पदार्थ पर से अपने मोह को हटा लो और एक सत्य पर, एक तथ्य पर, अपने ईश्वरत्व पर समग्र ध्यान को केन्द्रित करो । तुरन्त आपको आत्म-साक्षात्कार होगा ।

गणेशचतुर्थी
(९ सितम्बर, १९९४)
गणपतिजी का दिव्य विग्रह

विद्या के आरंभ में, विवाह के समय, गृहप्रवेश के समय, संग्राम में जाने से पूर्व आदि प्रसंगों पर सर्वप्रथम विघ्नहर्त्ता गणेशजी का पूजन किया जाता है । ऐसे विघ्नहर्त्ता गणेशजी के जन्म एवं उनके श्रीविग्रह के संदर्भ में पुराणों में अनेक बातें आती हैं ।

एक बार माता पार्वती ने स्नान के समय अपने उबटन से एक सुन्दर पुतले का निर्माण किया एवं उसमें प्राण डालकर उसे जीवित कर दिया । फिर अपने उस बालक को दरवाजे पर खड़ा करके कहा :

"पुत्र ! किसीको अन्दर मत आने देना ।"

माँ तो अन्दर चली गई । कुछ समय के बाद भगवान शिवजी आये तो बालक ने उन्हें भी रोक दिया कि 'माँ भीतर स्नान कर रही हैं ।' उसे तो पता न था कि ये भगवान शिव हैं और न ही शिवजी जानते थे कि यह पार्वतीजी द्वारा निर्मित है । अतः दोनों में युद्ध छिड़ गया और शिवजी ने अपने त्रिशूल से बालक का मस्तक काट दिया । जब पार्वतीजी को पता चला तो वे बड़ी दुःखी हुईं और उन्होंने शिवजी को सारा वृत्तांत सुना दिया । सारी बात जानकर भगवान शिव ने अपने गणों से कहा :

"जाओ, जिसका भी मस्तक पहले मिले उसका

मस्तक ले आओ ।"

आज्ञा मानकर गण एक हाथी के बच्चे का मस्तक ले आये। शिवजी ने उसे बालक के धड़ से जोड़कर, संकल्प से जीवित कर दिया। वही भगवान गणपति कहलाये। उनके एक हाथ में दण्ड एवं एक हाथ में मोदक दिखाया जाता है एवं मूषक (चूहे) को सवारी के रूप में बताया जाता है।

अब यहाँ प्रश्न उठ सकता है कि शिवजी ने गणपति का पहलेवाला सिर क्यों नहीं लगाया ? हाथी का ही क्यों लगाया ? तो वास्तव में पुराणों की कथाएँ होती ही हैं किसी तत्त्व को समझाने के लिए। भगवान गणेशजी का दिव्य विग्रह भी कई बातों की ओर संकेत करता है।

भगवान गणपति गणों के स्वामी हैं, गणों के पति हैं। अब गण से क्या तात्पर्य है ? इन्द्रियाँ गण हैं। पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ एवं पाँच कर्मेन्द्रियाँ ये बहिर्करण हैं एवं मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार ये चार अंतःकरण हैं। इन सबका जो स्वामी है वही गणपति है, ज्ञानस्वरूप है।

जो स्वामी हैं कुटुम्ब के, समाज के या धर्म के, उनको सब विषयों की गंध दूर से ही आ जानी चाहिए कि कहाँ क्या चल रहा है। चूँकि भगवान गणपति देवताओं के स्वामी हैं अतः उनकी लम्बी सूंड इस बात की ओर संकेत करती है।

उनके कान भी बड़े हैं। मतलब यह है कि जो कुटुम्ब आदि का बड़ा है उसे बहुश्रुत होना चाहिए, वेद-शास्त्र आदि के ज्ञान से पूर्ण होना चाहिए।

भगवान गणेशजी की छोटी आँखें इस बात की ओर संकेत करती हैं कि दृष्टि सूक्ष्म होनी चाहिए।

उनके हाथ का दण्ड इस बात की ओर संकेत करता है कि अपनी इन्द्रियों को, गणों को विवेक रूपी दण्ड से नियंत्रित रखा जाये।

जीवन में मधुरता हो। आपको देखकर लोगों को रूखापन महसूस न हो वरन् मधुरता का अहसास हो। अतः गणेशजी के हाथ में मोदक बताया गया है ताकि आप तृप्त रहें, औरों को भी तृप्त रखें।

गणेशजी का वाहन मूषक (चूहा) है। मूषक की सर्वत्र गति होती है ऐसे ही बड़े व्यक्तियों के, महापुरुषों के सेवकों की सर्वत्र गति होनी चाहिए और मति सूक्ष्म होनी चाहिए ताकि वे अपने स्वामी के संदेश को दूर-दूर तक फैला सकें।

इस प्रकार गणेशजी का दिव्य एवं पावन विग्रह अनेक बातों की ओर संकेत करता है जिन्हें अपनाकर हम भी अपने जीवन को दिव्य बना सकते हैं।

विधर्मी मखौल उड़ाते हैं कि शिवजी ने अपने बेटे का वही का वही सिर क्यों नहीं लगाया ? हाथी के सिरवाला भगवान ?

उन बेचारों को यह समझ में नहीं आया कि उस काल में सर्जरी का कितना विकास रहा होगा ! मनुष्य के धड़ के साथ हाथी के बच्चे के सिर की सर्जरी हो सकती है !

शिवजी का सामर्थ्य देखकर और प्राचीन काल की इस सर्जरी की कल्पना को सोचकर उनका सिर झुक जाना चाहिये एवं हिन्दू धर्म के दैवी गुणों से अपने को उन्नत करना चाहिए, न कि मखौल करके आत्मज्ञान से, दिव्य ज्ञान से वंचित, विलासी, विकारी, शराबी जीवन बिताकर अपनेको अशांति की खाई में डालना एवं श्रद्धा-भक्ति से शांति पानेवालों को गुमराह करना। यह उचित नहीं है। भगवान उनको सद्बुद्धि दें....

*

भादों शुक्ल चतुर्थी का चंद्रदर्शन निषिद्ध

भाद्रपद के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी का चंद्रमा देखने से चाहे जैसा भी निर्दोष व्यक्ति हो उसे कलंक लगता है। भगवान श्रीकृष्ण को भी मणि चुराने का कलंक लगा था। यदि भूल से भी चतुर्थी का चंद्रमा दिख जाये तो श्रीमद्भागवत में श्रीकृष्ण को कलंक लगा था, उस कथा का आदरपूर्वक श्रवण अथवा पठन करने से एवं तृतीया तथा पंचमी का चंद्रमा देखने से उस कलंक का प्रभाव दूर होता है। जहाँ तक

हो सके भाद्रपद के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी दि. ९-९-९४ का चंद्रमा न दिखे, इसकी सावधानी रखें ।

❀

ऋषिपंचमी

(१० सितम्बर, १९९४)

जिन ऋषियों ने हमारे जीवन से पाशवी विचारों को हटाकर हमें अपने परमेश्वर स्वभाव में जगाने के लिए प्रयास किया, जिन ऋषियों ने हमें हमारे विकास के लिए सहयोग देकर समाज का उत्थान करने की चेष्टा की उन ऋषियों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का जो दिन है वही ऋषिपंचमी है ।

जब तक मनुष्य अपने आत्मतत्त्व को नहीं जानता, अपनी अद्वैतता को नहीं जानता तब तक उसके द्वारा किये हुए शुभाशुभ कर्म उसको सुख-दुःख रूपी फल देते ही हैं । जाने-अनजाने ऐसे ऋषियों के प्रति, जो ईश्वर के पथ पर हैं ऐसे साधु-संतों के प्रति हमारा कोई अपराध हो गया हो, किसी महिला द्वारा मासिक धर्म के समय किसी संत का दर्शन हो गया हो या उनके निकट चली गई हो तो इस अपराध की क्षमा-प्राप्ति का ही यह दिन है । इसलिए भी इसे ऋषिपंचमी कहते हैं ।

ऋषिपंचमी का यह व्रत महिलाओं को तो अवश्य करना ही चाहिए । इस दिन हो सके तो नदी में स्नान करके सात कलशों की स्थापना करनी चाहिए एवं उसमें सप्तर्षियों का उनकी पत्नियों सहित आवाहन करके विधिपूर्वक अर्चन-पूजन करना चाहिए ।

जो ब्राह्मण ब्रह्मचिंतन करता हो उसे सात केले घी एवं शक्कर मिलाकर देने चाहिए, ऐसा विधान है । अगर सात केले देने की शक्ति न हो और न दे सकते हों तो कोई बात नहीं । परन्तु दूसरे साल ऐसा अपराध नहीं करेंगे ऐसा दृढ़ निश्चय तो करना ही चाहिए ।

ऋषिपंचमी के दिन महिलाएँ मिर्च-मसाले, घी, तेल, गुड़, शक्कर, दूध, अनाज वगैरह नहीं लेती । इस दिन लाल वस्त्र दान करने का भी विधान है । तुम्हारी अहंता और ममता ऋषिचरणों में अर्पित हो जाये, यही इस व्रत का ध्येय है ।

आज के दिन कश्यप, अत्रि, भरद्वाज, विश्वामित्र, वशिष्ठ, जमदग्नि एवं गौतम इन सप्तर्षियों को प्रणाम करके प्रार्थना करें कि : 'हमसे कायिक, वाचिक एवं मानसिक जो भी भूलें हो गयी हैं, उन्हें क्षमा करना । आज के बाद हमारा जीवन ईश्वर के मार्ग पर शीघ्रता से आगे बढ़े, ऐसी कृपा करना ।'

हमारे महान् ऋषियों ने पुरुष-जाति का तो कल्याण चाहा और किया, साथ ही साथ स्त्री जाति के कल्याण का भी खयाल किया । स्त्री जाति पर आती हुई आपत्तियों को हटाने के लिए उन्होंने स्वयं के मान-अपमान तक की परवाह नहीं की । जैसे मतंग ऋषि ने शबरी भीलन को सहारा देकर उसको भक्ति-जगत् के पवित्र इतिहास में ऊँचा स्थान दे दिया । नारद ऋषि ने हिरण्यकशिपु की पत्नी कयादू को अपने आश्रम में रखकर, उपदेश देकर, महान् भक्त प्रह्लाद का प्रागट्य करवाया । अग्निपरीक्षा के बाद भी लोगों ने जिन सीता पर उँगली उठाना न छोड़ा, धोबी द्वारा जिन पर कलंक लगाया गया, ऐसी माता सीता को जब लोकापवाद के कारण वनवास जाना पड़ा तब उन्हें सहारा देनेवाले वाल्मीकि ऋषि ही थे जिन्होंने माँ सीता को तो आश्रय दिया ही, साथ-ही-साथ लव-कुश को भी महान विद्याएँ सिखाकर तेजस्वी बनाया । जिस सपूत के नाम पर इस देश का नाम भारत पड़ा उस भरत की माता भी ऋषिआश्रम में ही पली-बढ़ी थीं एवं वहीं रहकर वे अपने पुत्र को महान् बना पायीं ।

जिन ऋषियों ने पुरुषों के जीवन को महान् बनाया, जिन ऋषियों ने नारी-जाति का गौरव बढ़ाने में सहयोग दिया, अनेक नारियों को महान् बनाया, ऐसे समस्त ऋषियों की हम हृदय से वंदना करते हैं । उनके चरणों में हमारे कोटि-कोटि प्रणाम...

❀

वायुपुराण में श्राद्ध-परिचय एवं महिमा...

(२० सितम्बर, १९९४ से प्रारंभ)

श्राद्धं चैषां मनुष्याणां श्राद्धमेव प्रवर्तते ।

(वायुपुराण : ३१.१७)

मनुष्यों द्वारा श्रद्धापूर्वक दी गई वस्तुएँ ही श्राद्ध कही जाती हैं । श्राद्धकर्म में पितरों की पूजा बिना किये ही किसी अन्य क्रिया का जो अनुष्ठान करता है उसकी उस क्रिया का फल राक्षसों तथा दानवों को प्राप्त होता है ।

आत्मज्ञानी सूतजी ऋषियों से कहते हैं :

" हे ऋषिवृंद ! परमेष्ठि ब्रह्मा ने पूर्वकाल में जिस प्रकार की आज्ञा दी है उसे तुम सुनो । ब्रह्माजी ने कहा है : "जो मनुष्य लोक के पोषण की दृष्टि से श्राद्ध आदि करेंगे, उन्हें पितृगण सर्वदा पुष्टि एवं संतति देंगे । श्राद्धकर्म में अपने प्रपितामह तक का नाम एवं गोत्र का उच्चारण कर जिन पितरों को कुछ दे दिया जायेगा वे पितृगण उस श्राद्धदान से अति सन्तुष्ट होकर देनेवाले की सन्ततियों को सन्तुष्ट रखेंगे ।'

हे ऋषियों ! उन्हीं पितरों की कृपा से दान, अध्ययन, तपस्या, इन सबसे सिद्धि प्राप्त होती है । इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है कि वे पितृगण ही हम सबको ज्ञान प्रदान करनेवाले हैं ।

नित्यप्रति गुरुपूजा प्रभृति सत्क्रियाओं में निरत रह योगाभ्यासी पितर सबको तृप्त रखते हैं । योगबल से चन्द्रमा को भी तृप्त करते हैं जिससे त्रैलोक्य को जीवन प्राप्त होता है । इससे योग की मर्यादा जाननेवालों को सदैव श्राद्ध करना चाहिये ।

श्राद्ध के अवसर पर सहस्रों ब्राह्मणों को भोजन कराने का जो फल मिलता है, योग में निपुण एक ही ब्राह्मण संतुष्ट होकर उक्त फल देता है एवं महान भय (नरक)से छुटकारा दिलाता है । एक सहस्र गृहस्थ, सौ वानप्रस्थी अथवा एक ब्रह्मचारी - इन सबसे एक योगी (योगाभ्यासी) बढ़कर है । वह चाहे नास्तिक हो, चाहे दुष्कर्मी हो, चाहे संकीर्ण विचारों वाला हो अथवा चोर ही क्यों न हो ? प्रजापति ने योगमार्ग में ऐसी व्यवस्था बतलाई है कि (योगी को छोड़कर) अन्यत्र दान नहीं करना चाहिये । जिस व्यक्ति का पुत्र अथवा पौत्र ध्यान में निमग्न रहनेवाले किसी योगाभ्यासी को श्राद्ध के अवसर पर भोजन करायेगा, उसके पितृगण अच्छी वृष्टि से किसानों की तरह परम संतुष्ट होंगे । यदि श्राद्ध के अवसर पर कोई योगाभ्यासी ध्यानपरायण भिक्षु न मिले तो दो ब्रह्मचारियों को भोजन कराना चाहिये । वे भी न मिलें तो किसी उदासीन ब्राह्मण को भोजन करा देना चाहिये । जो व्यक्ति सौ वर्षों तक केवल एक पैर पर खड़े होकर, वायु का आहार करके स्थित रहता है उससे भी बढ़कर ध्यानी एवं योगी है ऐसी ब्रह्माजी की आज्ञा है ।

श्राद्ध में चाँदी का दान, चाँदी के अभाव में उसका दर्शन अथवा उसका नाम ले लेना भी पितरों को अनन्त अक्षय एवं स्वर्ग देनेवाला दान कहा जाता है । योग्य पुत्रगण चाँदी के दान से अपने पितरों को तारते हैं । काले मृगचर्म का सान्निध्य, दर्शन अथवा दान राक्षसों का विनाश करनेवाला एवं ब्रह्मतेज का वर्धक है । सुवर्णनिर्मित, चाँदीनिर्मित, ताम्रनिर्मित वस्तु, दौहित्र, तिल, वस्त्र, कुश का तृण, नेपाल का कम्बल, अन्यान्य पवित्र वस्तुएँ एवं मन, वचन, कर्म का योग, ये सब श्राद्ध में पवित्र वस्तुएँ कही गई हैं ।

उपरोक्त वस्तुओं द्वारा किया गया विधिपूर्वक श्राद्ध श्राद्धकर्त्ता को आयुष्य, आरोग्य, कीर्ति, प्रजा, बुद्धि, संतति आदि सब कुछ बढ़ानेवाला है । दक्षिण और पूर्व दिशा में, विशेषतया विदिक कोण में श्राद्धकर्म का विधान है । सर्वत्र अरत्नि (कनिष्ठिका अंगुली फैलाकर कोहनी तक की लम्बाई) परिमाण का चौकोर

सुन्दर स्थान होना चाहिये । शास्त्रविधि के अनुसार पितरों के उपयुक्त श्राद्धस्थल में तीन गढ़े बनाने चाहिए जो परिमाण में रत्निमात्र (मुट्ठी बाँधे हुए हाथ का परिमाण) लम्बे और चाँदी से विभूषित हों । इसके अतिरिक्त खदिर के डंडे भी होने चाहिये जो वित्ते भर लंबे हों । उनके चारों ओर चार अँगुल मान के वेष्ठन बने हों । पूर्व और दक्षिण के मुख भाग की ओर से पृथ्वी पर रखे गये, छिद्र रहित उन डंडों को परम पवित्र जल से नहलायें । बकरी के अथवा गाय के दूध अथवा जल से उनको पुनः शुद्ध करें ।

इस प्रकार विधिपूर्वक तर्पण करने से सर्वकालिक तृप्ति होती है । कर्त्ता ऐहिक-पारलौकिक विभूतियों से सुसमृद्ध तथा सर्व कर्म समन्वित होता है । इसी प्रकार तीन बार सवन स्नान कर जो विधिपूर्वक मंत्रादि का उच्चारण कर भलीभाँति सर्वदा पितरों की पूजा करता है वह अश्वमेध यज्ञ का फलभागी होता है । अमावस्या तिथि को पृथ्वीतल पर चार अँगुल के गढ़ों में श्राद्धोपयोगी वस्तुओं की स्थापना करनी चाहिये । ये त्रिःसप्तयज्ञ के नाम से विख्यात है । इन्हीं पर त्रैलोक्य की स्थिति है । जो व्यक्ति इसका अनुष्ठान करता है उसको पुष्टि, ऐश्वर्य, दीर्घायु, संतति, प्रचुर लक्ष्मी तथा मोक्ष की क्रमशः प्राप्ति होती है ।

ब्राह्मणों से सत्कारित तथा पूजित यह एक मंत्र समस्त पापों को दूर करनेवाला, परम पवित्र तथा अश्वमेध यज्ञ की फलप्राप्ति करानेवाला है ।"

सूतजी कहते हैं : "हे ऋषियों ! इस मंत्र की रचना ब्रह्मा ने की थी । यह अमृत-मंत्र है ।

देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च ।
नमः स्वधायै स्वहायै नित्यमेव भवन्तुत ॥

अर्थात्- समस्त देवताओं, पितरों, महायोगियों, स्वधा एवं स्वाहा सबको हम नमस्कार करते हैं । ये सब शाश्वत फल प्रदान करनेवाले हैं ।"

सर्वदा श्राद्ध के प्रारम्भ, अवसान तथा पिण्डदान के समय इस मंत्र को सावधान चित्त होकर तीनबार पाठ करना चाहिये जिससे पितृगण शीघ्र वहाँ आ जाते हैं और राक्षसगण भाग जाते हैं । राज्यप्राप्ति का अभिलाषी आलस्य रहित होकर इस मंत्र का सर्वदा पाठ करे । यह वीर्य, पवित्रता, धन, सात्त्विक बल, लक्ष्मी, दीर्घायु आदि को बढ़ानेवाला है ।

बुद्धिमान पुरुष कभी दीन, क्रुद्ध अथवा अन्यमनस्क होकर श्राद्ध न करे । एकाग्रचित्त होकर श्राद्ध करना चाहिये । मन में भावना करे कि जो कुछ भी अपवित्र तथा अनियमित वस्तुएँ हैं, मैं उन सबका निवारण कर रहा हूँ । सभी विघ्न डालनेवाले असुर एवं दानवों को मैं मार चुका । सब राक्षस, यक्ष, पिशाच एवं यातुधानों (राक्षसों) के समूह मुझसे मारे जा चुके ।

समुद्र तथा समुद्र में गिरनेवाली नदियों के तट पर, गौओं की गौशाला में, नदी-संगम पर, उच्च गिरिशिखर पर, वनों में, स्वच्छ लीपी-पुती मनोहर पृथ्वी पर, गोबर से लीपे हुए एकान्त घर में नित्य ही विधिपूर्वक श्राद्ध करने से मनोरथ पूर्ण होते हैं एवं इस प्रकार व्यक्ति ब्रह्मत्व की सिद्धि प्राप्त कर सकता है ।

अश्रद्दधानाः पाप्मानो नास्तिकाः स्थितसंशयाः ।
हेतुदृष्टा च पंचैते न तीर्थफलमश्नुते ॥
गुरुतीर्थे परासिद्धिस्तीर्थानां परमं पदम् ।
ध्यानं तीर्थपरं तस्माद् ब्रह्मतीर्थं सनातनम् ॥

'श्राद्ध न करने वाले, पापात्मा, परलोक को न माननेवाले अथवा वेदों के निन्दक, स्थिति में संदेह रखनेवाले संशयात्मा एवं सभी पुण्य कार्यों में किसी कारण का अन्वेषण करनेवाले कुतर्की - इन पाँचों को पवित्र तीर्थों का फल नहीं मिलता ।

गुरुरूपी तीर्थ में परम सिद्धि प्राप्त होती है । वह सभी तीर्थों से श्रेष्ठ है । उससे भी श्रेष्ठ तीर्थ ध्यान है । यह ध्यान साक्षात् ब्रह्मतीर्थ है । इसका कभी विनाश नहीं होता ।'

**ये तु व्रते स्थिता नित्यं ज्ञानिनो ध्यानिनस्तथा ।
देवभक्ता महात्मानः पुनीयुर्दर्शनादपि ॥**

'जो ब्राह्मण नित्य व्रतपरायण रहते हैं, ज्ञानार्जन में प्रवृत्त रहकर योगाभ्यास में निरत रहते हैं, देवता में भक्ति रखते हैं, महान आत्मा होते हैं वे दर्शन मात्र से पवित्र करते हैं ।' (वायुपुराण : ७९.९०)

जो व्यक्ति अष्टकाओं में पितरों की पूजा आदि नहीं करते उनका यह लोक (जन्म) व्यर्थ हो जाता है और जो कुछ प्राप्त है वह नष्ट हो जाता है । जो इन अवसरों पर श्राद्धादि का दान करते हैं वे देवताओं के समीप अर्थात् स्वर्गलोक को जाते हैं और जो नहीं देते वे तिर्यक् (अधम पक्षी आदि) योनियों में जाते हैं ।

जो पूर्णमासी के दिन श्राद्धादि करता है उसकी बुद्धि, पुष्टि, स्मरणशक्ति, धारणाशक्ति, पुत्र-पौत्रादि एवं ऐश्वर्य की वृद्धि होती है, वह पूर्ण पर्व का फल भोगता है । इसी प्रकार **प्रतिपदा** धन-सम्पत्ति के लिये होती है, एवं श्राद्ध करनेवाले की प्राप्त वस्तु नष्ट नहीं होती । **द्वितीया को** श्राद्ध करनेवाला दो पादवालों (मनुष्यों) का राजा होता है । उत्तम अर्थ की प्राप्ति के अभिलाषी को **तृतिया** विहित है । यही तृतीया शत्रुओं का नाश करनेवाली और पापनाशिनी है । जो **चतुर्थी को** श्राद्ध करता है वह शत्रुओं का छिद्र देखता है अर्थात् उसे शत्रुओं की समस्त कूट चालों का ज्ञान हो जाता है । **पंचमी तिथि को** श्राद्ध करनेवाला उत्तम लक्ष्मी की प्राप्ति करता है । जो **षष्ठी तिथि को** श्राद्धकर्म को संपन्न करता है उसकी पूजा देवता लोग करते हैं । जो **सप्तमी को** श्राद्धादि करते हैं उनको महान यज्ञों के पुण्यफल प्राप्त होते हैं और वे गणों के स्वामी होते हैं । जो मनुष्य **अष्टमी को** श्राद्ध करता है वह सम्पूर्ण समृद्धियाँ प्राप्त करता है । **नौवीं तिथि को** श्राद्ध करनेवाले प्रचुर ऐश्वर्य एवं मन के अनुसार अनुकूल चलनेवाली स्त्री को प्राप्त करते हैं । **दशवीं तिथि को** श्राद्ध करनेवाला मनुष्य ब्रह्मत्व की लक्ष्मी प्राप्त करता है ।

एकादशी का श्राद्ध सर्वश्रेष्ठ दान है । वह समस्त वेदों को प्राप्त कराता है । उसके सम्पूर्ण पापकर्म का विनाश हो जाता है तथा उसे निरंतर ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है ।

द्वादशी तिथि के श्राद्ध से राष्ट्र का कल्याण तथा अन्नों की प्राप्ति कही गई है ।

त्रयोदशी के श्राद्ध से सन्तति, बुद्धि, पशु, धारणाशक्ति, स्वतंत्रता, उत्तम पुष्टि, दीर्घायु तथा ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है ।

चतुर्दशी का श्राद्ध जिसके घर में जवान लोग मर गये हों उन सबके लिये किया जाता है तथा जो हथियारों द्वारा मारे गये हों उनके लिये भी चतुर्दशी को श्राद्ध करना चाहिए ।

अमावस्या का श्राद्ध समस्त विषम उत्पन्न होनेवालों के लिये अर्थात् तीन कन्याओं के बाद पुत्र या तीन पुत्रों के बाद कन्याएँ हों उनके लिए होता है । जुड़वें उत्पन्न होनेवालों के लिये ब्राह्मणों को भोजन देना चाहिये । इसका महान् फल है ।

जो इस प्रकार श्राद्धादि कर्म संपन्न करते हैं वे समस्त मनोरथों को प्राप्त करते हैं और अनंतकाल तक स्वर्ग का उपभोग करते हैं । मघा नक्षत्र पितरों को अभीष्ट सिद्धि देनेवाला है । अतः उक्त नक्षत्र के दिन किया गया श्राद्ध अक्षय कहा गया है । पितृगण उसे सर्वदा अधिक पसन्द करते हैं ।

बृहस्पति ने कहा : श्राद्ध विषयक चर्चा एवं उसकी विधियों को सुनकर जो मनुष्य दोषदृष्टि से देखकर उनमें अश्रद्धा करता है वह नास्तिक चारों ओर अंधकार से घिरकर घोर नरक में गिरता है । जो योग के द्वेष करनेवाले हैं वे समुद्र में ढोला बनकर तब तक निवास करते हैं जबतक इस पृथ्वी की अवस्थिति रहती है । भूल से भी योगियों की निन्दा तो करनी ही नहीं चाहिये क्योंकि योगियों की निन्दा करने से वहीं कृमि होकर जन्म धारण करना पड़ता है । योगपरायण योगेश्वरों की निन्दा करने से मनुष्य चारों

ओर से अंधकार से आछन्न, अत्यंत घोर दिखाई पड़नेवाले नरक में निश्चय ही जाता है। आत्मा को वश में रखनेवाले योगेश्वरों की निन्दा जो मनुष्य सुनता है वह चिरकाल पर्यंत कुम्भीपाक नरक में निवास करता है इसमें तनिक भी संदेह नहीं। योगियों के प्रति द्वेष की भावना मनसा, वाचा, कर्मणा, सर्वथा वर्जित रखनी चाहिये।

जिस प्रकार चारागाह में सैकड़ों गौओं में छिपी हुई अपनी माँ को बछड़ा ढूँढ लेता है उसी प्रकार श्राद्धकर्म में दिये गये पदार्थों को मंत्र वहाँ पर पहुँचा देता है जहाँ जीव अवस्थित रहता है। पितरों के नाम, गोत्र और मंत्र श्राद्ध में दिये गये अन्न को उनके पास ले जाते हैं, चाहे वे सैकड़ों योनियों में क्यों न गये हों। श्राद्ध के अन्नादि से उनकी तृप्ति होती है। परमेष्ठी ब्रह्मा ने इसी प्रकार की श्राद्ध की मर्यादा स्थिर की है।

जो मनुष्य इस श्राद्ध के माहात्म्य को नित्य श्रद्धाभाव से, क्रोध को वश में रख, लोभ आदि से रहित होकर श्रवण करता है वह अनन्त काल पर्यंत स्वर्ग भोगता है। समस्त तीर्थों एवं दानों के फलों को वह प्राप्त करता है। यह मौत का सबसे श्रेष्ठ उपाय है। स्वर्गप्राप्ति के लिए इससे बढ़कर श्रेष्ठ उपाय कोई दूसरा नहीं है। आलस्य रहित होकर पर्वसंधियों में जो मनुष्य इस श्राद्ध विधि का पाठ सावधानीपूर्वक करता है वह मनुष्य परम तेजस्वी संततिवान होता है और देवताओं के समान उसे पवित्र लोक की प्राप्ति होती है। जिन अजन्मा भगवान स्वयंभू (ब्रह्मा) ने श्राद्ध की पुनित विधि बतलाई है उन्हें हम नमस्कार करते हैं। महान योगेश्वरों के चरणों में हम सर्वदा प्रणाम करते हैं।

(वायुपुराण : अ. ७१ से ८१ का संक्षेप)

❀

जैसे यहाँ के भेजे हुए रूपये लंदन में पाउन्ड, अमेरिका में डॉलर एवं जापान में येन बन जाते हैं ऐसे ही पितरों के प्रति किये गये श्राद्ध का अन्न, श्राद्धकर्म का फल हमारे पितर जहाँ हैं, जैसे हैं उनके अनुरूप उनको मिल जाता है। उससे संतुष्ट होकर वे श्राद्धकर्त्ता के कुल में कुलीन संतान और सुख-संतोष प्रदान करते हैं।

दूरभाष और दूरदर्शन आदि यंत्र हजारों किलोमीटर का अंतराय दूर करते हैं यह प्रत्यक्ष है। इन यंत्रों से भी मंत्रों का प्रभाव बहुत ही ज्यादा होता है।

भगवान रामचंद्र भी श्राद्ध करते थे। पैठण के महान आत्मज्ञानी संत हो गये श्री एकनाथजी महाराज। पैठण के निंदक ब्राह्मणों ने एकनाथजी को ज्ञाति से बाहर कर दिया था एवं उनके श्राद्ध का बहिष्कार किया था। उन योगसंपन्न एकनाथजी ने ब्राह्मणों के एवं अपने पिता, पितामह, प्रपितामह जो पितृलोक में थे, उनको बुलाकर भोजन कराया। यह देखकर पैठण के ब्राह्मण चकित रह गये एवं उनसे अपराधों की क्षमायाचना की।

देवलोक एवं पितृलोक का आयुष्य मानवीय हजारों वर्षों से ज्यादा होता है।

श्राद्धपर्व का वर्णन महाभारत, चतुर्थ खंड, स्त्रीपर्व में छब्बीसवें अध्याय में तथा श्राद्धकल्प का वर्णन सविस्तार वायुपुराण के ७१ से ८१ अध्याय तक एवं मत्स्यपुराण में भी श्राद्धकल्प एवं पितृगाथा वर्णन में आता है।

इससे पितर एवं पितृलोक को मानकर उनका फायदा उठाना चाहिये तथा श्राद्ध करना चाहिये। **श्राद्धपर्व भादों मास की प्रतिपदा अर्थात् दि. २० सितम्बर, १९९४ से शुरू होगा।**

(पेज १८ से जारी...)

पूज्य स्वामीजी ने संतवाणी का संदर्भ देकर कहा कि जो होता है वह सब भाता नहीं। जो भाता है वह टिकता नहीं। जो होता है वह सब परिवर्तनशील है। अतः परमार्थ सत्य की स्मृति जगाकर साक्षी चैतन्य में स्थित हुआ करो। ईश्वर की मरजी को समझकर आनंदित रहा करो।

हृषिकेश में सत्संग-वर्षा

दिनांक : २२-५-१९९४

आज गीता आश्रम में गीता-भागवत सत्संग समारोह के शुभारंभ में पूरे देश एवं उत्तरा खण्ड से आनेवाले हजारों-हजारों श्रद्धालुओं एवं साधु समाज से खचाखच भरे हुए आश्रम के मैदान में रचित सत्संग भवन में विश्व-विख्यात जीवन्मुक्त संतशिरोमणि पूज्यपाद संत श्री आसारामजी महाराज ने कलियुग में हरिनाम-कीर्तन की महत्ता बताते हुए कहा कि कलियुग में वे मनुष्य भाग्यशाली एवं कृतार्थ हैं कि जो हरिनाम-कीर्तन करते हैं एवं दूसरों को करवाते हैं । पापों का हरण कर लेनेवाले उन परमात्मा का नाम हरि है । हरि के नाम का कीर्तन करने से हृदय निष्पाप होता है ।

कुण्डलिनी योग के अनुभवनिष्ठ आचार्य एवं शक्तिपातदीक्षा के समर्थ सद्गुरु श्री आसारामजी बापू ब्रह्मलीन स्वामी व्यासानंदजी महाराज की पुण्यस्मृति में आयोजित गीता-भागवत सत्संग समारोह में अपार जनमेदनी को मंत्रमुग्ध करते हुए कह रहे थे कि : 'हरि ॐ' नाम के उच्चारण से एवं कीर्तन से मूलाधार केन्द्र में स्पंदन होते हैं । फलस्वरूप भय, ईर्ष्या, स्पर्धा, वैर, डाह, क्रोध आदि दुर्गुण, विकार मिट जाते हैं । गुरु नानक कहते थे :

भयनाशन दुर्मति हरण कलि में हरि को नाम ।
निशदिन नानक जो जपे सफल होहिं सब काम ॥

गौरांग महाप्रभु के कीर्तन में हिन्दू तो झूमते ही थे, मुसलमान भी तल्लीन हो जाते थे । एक मुसलमान युवक ने तो हिन्दू धर्म की दीक्षा ले ली और हरिनाम-कीर्तन में तल्लीन हो गया । मुसलमान होकर हरिकीर्तन करने के कारण उसे सजा मिली । उसने बेंत खाये लेकिन हरिनाम नहीं छोड़ा । इतना ही नहीं दूसरों को भी हरि-कीर्तन करवाया । उसके शरीर में पीड़ हो रही थी फिर भी चेहरे पर मुस्कान एवं आँख में चमक थी ।

कीर्तन की महिमा के लिए देवर्षि नारद ए शाण्डिल्य मुनि कहते हैं : **'तत्कीर्तनात् ।'**

कलियुग में मनुष्य की शांति भंग हो गई है उसके निवारण के लिए ब्रह्माजी ने मंत्र बनाया

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥

श्रीमद् भागवत में आता है कि :

'जिसकी वाणी गद्गद् हो जाती है, जिसका चि द्रवित हो जाता है, जो बार-बार रोने लगता है, क हँसने लगता है, कभी लज्जा छोड़कर उच्च स्वर गाने लगता है, कभी नाचने लगता है ऐसा मेरा भ समग्र संसार को पवित्र करता है ।'

(श्रीमद् भागवत : ११.१४.२

विश्वविख्यात गीताचार्य श्री आसारामजी बापू कहा कि गीता विश्वग्रंथ है । गीता भगवान के श्रीमु से निकली है । गीता के श्लोकों का पाठ करने हरिनाम-कीर्तन से एवं साधु पुरुषों के दर्शन म से करोड़ों तीर्थों का फल मिलता है । गीता में संय त्याग, कर्त्तव्यनिष्ठा, स्वधर्म के लिए स्वार्थत्याग शिक्षा मिलती है ।

हर कार्य के पीछे ईश्वर का हाथ देखो । सृष्टि किसी मूर्ख, स्वार्थी, अज्ञानी ने नहीं बनायी हमारे सबके परम सुहृद ईश्वर ने बनायी है । उ सब कार्य तुम्हारे हमारे मं के लिए ही होते हैं । सब क में प्रभु के हाथ को देखे विफलता, विघ्न-बाधा अ तुम्हारे छुपे हुए आत्मबल ईश्वर-विश्वास को जगाने लिए आते हैं । निर्भय र अंतर्यामी ईश्वर से सम्बन्ध ब रखो । *(अनु. पेज १७ प*

गीता विश्वग्रंथ है । गीता भगवान के श्रीमुख से निकली है । गीता के श्लोकों का पाठ करने से, हरिनाम-कीर्तन से एवं साधु पुरुषों के दर्शन मात्र से करोड़ों तीर्थों का फल मिलता है ।

शरद ऋतु में स्वास्थ्य-सुरक्षा

समग्र भारत की दृष्टि से १६ सितम्बर से १४ नवम्बर तक शरद ऋतु मानी जा सकती है ।

वर्षा ऋतु के बाद शरद ऋतु आती है । वर्षा ऋतु में प्राकृतिक रूप से संचित पित्त-दोष का प्रकोप शरद ऋतु में बढ़ जाता है । इससे इस ऋतु में पित्त का पाचक स्वभाव दूर होकर वह विदग्ध बन जाता है। परिणामस्वरूप बुखार,पेचिश, उल्टी, दस्त, मलेरिया आदि होता है । आयुर्वेद में समस्त ऋतुओं में शरद ऋतु को 'रोगों की माता' कहा है, प्राणहर यम की दाढ़ भी कहा है ।

इस ऋतु में पित्त-दोष एवं लवण रस की स्वाभाविक ही वृद्धि हो जाती है । सूर्य की गर्मी भी विशेष रूप से लगती है । अतः पित्त-दोष, लवण रस और गर्मी इन तीनों का शमन करे ऐसे मधुर (मीठे), तिक्त (कड़वे) एवं कषाय (तूरे) रस का विशेष उपयोग करना चाहिए । पित्त-दोष की वृद्धि करें ऐसी खट्टी, खारी एवं तीखी वस्तुओं का त्याग करना चाहिए । पित्त-दोष के प्रकोप की शांति के लिए मधुर, ठंडी, भारी, कड़वी एवं तूरी (कसैली) वस्तुओं का विशेष सेवन करें ।

इस ऋतु में सब्जियाँ खूब होती हैं किन्तु उसमें वर्षा ऋतु का नया पानी होने की वजह से वे दोषयुक्त होती हैं । उनमें लवण (खारे) रस की अधिकता होती है । अतः जहाँ तक हो सके शरद ऋतु में सब्जियाँ कम लें एवं भादों (भाद्रपद) के महीने में तो उन्हें त्याज्य ही मानें ।

घी-दूध पित्त-दोष का मारक है अतः हमारे पूर्वजों ने भादों में श्राद्ध पक्ष का आयोजन किया होगा । इस ऋतु में घी-दूध का उपयोग खूब करें ।

इस ऋतु में अनाज में गेहूँ, जौ, ज्वार, धान, सामा (एक प्रकार का अनाज) आदि लेना चाहिए । दलहन में चने, तुअर, मूँग, मठ, मसूर, मटर लें । सब्जी में गोभी, ककोड़ा (खेखसा), परवल, गिल्की, ग्वारफली, गाजर, मक्के का भुट्टा, तूरई, चौलाई, लौकी, पालक, कद्दू, मुनगा, सूरन (जमीकंद), आलू वगैरह लिये जा सकते हैं । फलों में अंजीर, पके केले, जामफल (बिही), जामुन, तरबूज, अनार, अंगूर, नारियल, पका पपीता, मोसम्बी, नीबू, गन्ना आदि लिया जा सकता है । सुखे मेवे में अखरोट, आलू, काजू, खजूर, चारोली, बदाम, सिंघाड़े, पिस्ता आदि लिया जा सकता है । मसाले में जीरा, आँवला, धनिया, हल्दी, खसखस, दालचिनी, काली मिर्च, सौंप आदि लिये जा सकते हैं । इसके अलावा नारियल का तेल, अण्डी का तेल, घी, दूध, मख्खन, मिश्री, चावल आदि लिये जायें तो अच्छा है ।

शरद ऋतु में खीर, रबड़ी आदि ठंडी करके खाना आरोग्यता के लिए लाभप्रद है । पके केले में घी और इलायची डालकर खाने से लाभ होता है । गन्ने का रस एवं नारियल का पानी खूब फायदेमंद है । काले मुनक्के (द्राक्ष), सौंप एवं धनिया को मिलाकर बनाया गया पेय गर्मी का शमन करता है ।

त्याज्य वस्तुएँ

शरद ऋतु में ओस, जवाखार जैसे क्षार, दही, खट्टी छाछ, तेल, चरबी, गरम-तीक्ष्ण वस्तुएँ, खारे-खट्टे रस की चीजें त्याज्य हैं । बाजरी, मक्का, उड़द, कुलथी, चौला, फूट, प्याज, लहसुन, मेथी की भाजी, नोनिया की भाजी, रतालू, बैंगन, इमली, हींग, पोदीना, फालसा, अन्नानास, कच्चे बेलफल, कच्ची कैरी, तिल, मूँगफली, सरसों आदि पित्तकारक होने से त्याज्य हैं । खट्टी छाछ, भींडी एवं ककड़ी खास न लें । इस

ऋतु में तेल की जगह घी का उपयोग उत्तम है । जिनको पित्त-विकार होता हो उन्हें महासुदर्शन चूर्ण, नीम, नीम की अंतरछाल जैसी कड़वी एवं तूरी-कसैली चीजें खास करके उपयोग में लानी चाहिए ।

ऋतुजन्य विकारों से बचने के लिए अन्य दवाइयों का खर्च करने की अपेक्षा आँवला १० ग्राम, धनिया १० ग्राम, सौंप १० ग्राम, मिश्री ३३ ग्राम लेकर इनका चूर्ण बनाकर खाने के आधे घण्टे बाद पानी के साथ लेना हितकर है । इस ऋतु में जुलाब लेने से पित्तदोष शरीर से निकल जाता है । पित्तजन्य विकारों से रक्षा होती है । जुलाब के लिए हरड़े उत्तम औषधि है ।

इस ऋतु में शरीर पर कपूर एवं चंदन का उबटन लगाना, खुले में चाँदनी में बैठना, घूमना-फिरना, चंपा, चमेली, मोगरा, गुलाब आदि पुष्पों का सेवन करना लाभप्रद है । दिन की निद्रा, धूप, बर्फ का सेवन, अति परिश्रम, थका डाले ऐसी कसरत एवं पूर्व दिशा से आनेवाली वायु इस ऋतु में हानिकारक है ।

शरद ऋतु में रात्रि में पसीना बने ऐसे खेल खेलना, रास-गरबा करना हितकर है । होम-हवन करने से, दीपमाला करने से एवं फटाके फोड़ने से वायुमंडल की शुद्धि होती है ।

❀

मस्सों (Piles) का इलाज

मस्सों (बवासीर, अर्श, Piles) की कैसी भी बीमारी हो, ऑपरेशन कराने की कोई आवश्यकता नहीं है । इसके लिए ताजी मोरी छाछ करीब दो किलो लेकर उसमें ५० ग्राम जीरा पीसकर एवं थोड़ा-सा नमक मिला दें । जब भी पानी पीने की प्यास लगे तब यह छाछ पी लें । पूरे दिन भर पानी के बदले में यह छाछ ही पियें । चार दिन तक यह प्रयोग करें । मस्से ठीक हो जाएँगे । चार दिन के बदले सात दिन प्रयोग जारी रखें तो अच्छा है । कोई परहेज की आवश्यकता नहीं है । यह आजमाया हुआ एवं सफल प्रयोग है ।

श्रीकृष्ण का विनायक-शान्ति वर्णन

महाराज युधिष्ठिर ने कहा : "हे देवेश ! हे विभो ! अब आप विनायक-शान्ति की विधि मुझे बतायें, जिसको करने से सभी मानव समस्त आपत्तियों से मुक्त हो जाते हैं ।"

भगवान श्रीकृष्ण बोले : "राजेन्द्र ! विनायक की प्रिय श्रेष्ठ शान्ति का मैं वर्णन करता हूँ जिसके आचरण से सभी अरिष्ट नष्ट हो जाते हैं । यह विनायक-शांति सम्पूर्ण विघ्नों को दूर करने के लिए की जाती है । स्वप्न में जल में अवगाहन करना, मुण्डित सिरों तथा गेरूए वस्त्र को देखना, मस्तकरहित शव देखना, बिना किसी कारण के दुःखी होना, कार्य में असफल हो जाना इत्यादि विनायक द्वारा गृहीत हो जाने पर ही दिखायी देते हैं । विनायक द्वारा गृहीत हो जाने पर राजपुत्र राज्य को प्राप्त नहीं कर सकता, कुमारी पति को नहीं प्राप्त कर सकती, गर्भिणी पुत्र को, श्रोत्रिय आचार्यत्व को प्राप्त नहीं कर पाता, विद्यार्थी पढ़ नहीं पाता, व्यापारी व्यापार में लाभ नहीं ले पाता और कृषक कृषिकार्य में सफल नहीं होता ।

इन विघ्नों को दूर करने के लिए पुण्य दिन में विनायक-शांति की विधि-कार्य करना चाहिए । पीले सरसों की खली, घृत और सुगंधित कुंकुम का उबटन लगाकर स्नान कर पवित्र हो जाएँ । ब्राह्मणों द्वारा स्वस्तिवाचन कराएँ । विधिपूर्वक कलशस्थापन करें और ब्राह्मण अभिमंत्रित जल के द्वारा यजमान का अभिषेक करके इस प्रकार कहें :

सहस्राक्षं शतधारमृषिणा वचनं कृतम् ।
तेन त्वामभिषिञ्चामि पावमान्यः पुनन्तु ते ॥
भगं ते वरुणो राजा भगं सूर्यो बृहस्पतिः ।
भगमिन्द्रश्च वायुश्च भगं सप्तर्षयो ददुः॥
यत्ते केशेषु दौर्भाग्यं सीमन्ते यच्च मूर्धनि ।
ललाटे कर्णयोरक्ष्णोरापस्तद्घ्नन्तु ते सदा ॥

(अनुसंधान पेज २९ पर...)

स्वप्न में बतायी गई औषधि से तुरन्त लाभ

पहले मेरे पेट में गैस की बीमारी इतनी जोरदार थी कि दिन में एक रोटी खाना भी मुश्किल हो जाता था, पेट बहुत फूल जाता था । मैंने डॉक्टर से भी इलाज करवाया लेकिन कोई असर न हुआ ।

दिनांक : १५-३-९४ को पूज्य बापू की ऐसी कृपा हुई कि उन्होंने रात्रि को स्वप्न में आकर इलाज बता दिया । उन्होंने स्वप्न में कहा : "तू परेशान क्यों होता है ? तेरा रोग पंद्रह दिन में ठीक हो जायेगा । तू सुबह जल्दी उठकर बिना दातौन किये एक-दो गिलास पानी पी और एक माला 'हरि ॐ... हरि ॐ...' की जप ।"

मैंने दिनांक : १६-३-९४ की सुबह से ही यह प्रयोग शुरू कर दिया । दो-चार दिन में ही मुझे कुछ शांति का अहसास हुआ । डॉक्टर का इलाज काम न कर सका किन्तु यह पानी-प्रयोग तो चार दिन में ही असर बताने लगा । मैंने बड़ी लगन एवं श्रद्धा से इस प्रयोग को चालू रखा । अब मैं एकदम ठीक हूँ ।

ऐसी कृपा पूज्यपाद बापू ही कर सकते हैं । पू. बापू के चरणों में बार-बार वंदना......

- लक्ष्मणसिंह डोडिया, थमगुराड़िया, तहसील आलोट, जि. रतलाम (म.प्र.)

आपके पत्र

प्रधान मंत्री

नई दिल्ली
7 फरवरी, 1994

प्रिय श्री पटेल,

आपका दिनांक 18 जनवरी, 1994 का पत्र मिला, धन्यवाद ।

कृपया "ऋषि प्रसाद" पत्रिका के पांचवें वर्ष में प्रवेश करने के अवसर पर श्री योग वेदान्त सेवा समिति सन्त श्री आसाराम आश्रम, अहमदाबाद को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं । मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि यह पत्रिका समाज में अध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों को उन्नत बनाने की दिशा में कार्यरत है ।

शुभकामनाओं सहित,

आपका,

(पी०वी० नरसिंह राव)

संस्था समाचार

गर्मी के दिनों में हृषिकेश के आश्रम में, एकांतवास के दौरान भी पूज्यपाद गुरुदेव ने, गंगातट के तीर्थस्थान में दिनांक : २२ से २५ मई '९४ तक हरिकीर्तन, सत्संग और ध्यान-ज्ञान की अमृतवर्षा की ।

हर वर्ष की अपेक्षा इस वर्ष गुजरात में वर्षा ऋतु का आरंभ जल्दी हुआ । भीषण गर्मी के ताप से तप्त हुई वसुन्धरा मेघराजा की कृपा से परितृप्त हुई । वातावरण में चहुँ ओर ठंडक छा गयी । पिछले कई वर्षों में इस वक्त पहली बार पूज्य गुरुदेव गुरुपूर्णिमा के एक महीने पूर्व अहमदाबाद आश्रम में पधारे । रविवार - बुधवार के अलावा भी प्रतिदिन सायंकाल में पूज्यश्री के पावन सान्निध्य में ध्यान-सत्संग की सरिता बहने लगी । ऐसा करते-करते गुरुपूर्णिमा महोत्सव का आगमन हुआ ।

इस पूरे वर्ष के दौरान भारत-भर में पूज्य बापू के ५१ जितने गीता-भागवत सत्संग समारोह बड़े पैमाने पर आयोजित हुए । उसमें एक करोड़ से भी अधिक लोगों ने पूज्यश्री के प्रत्यक्ष दर्शन एवं अमृतवाणी का लाभ लिया । गुरुपूर्णिमा महोत्सव के प्रसंग पर अहमदाबाद शहर के अलावा गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु आदि प्रांतों के शहरों एवं गाँवों से, वैसे ही अमेरिका, कनाड़ा, लंदन, हाँगकाँग, सिंगापुर, इन्डोनेशिया, दुबई आदि दूर के देशों में रहते भक्तों-साधकों को मिलाकर लाखों की संख्या में, अहमदाबाद के आश्रम में महोत्सव के पाँच दिन पूर्व से ही लोगों का आना शुरू हो गया ।

शास्त्रों में वर्णन आता है कि अन्य देवी-देवताओं की पूजा करने के बाद भी किसीकी पूजा करना बाकी रह जाता है । किन्तु सच्चे ब्रह्मनिष्ठ सद्गुरु की पूजा करने के बाद दूसरे किसीकी भी पूजा करना शेष नहीं रहता । सद्गुरु शिष्य को जीवभाव में से हटाकर शिवत्व में जगा देते हैं, ब्रह्मरस की परम तृप्ति और परमानंद की प्राप्ति करा देते हैं । माँ - बाप तो देह में जन्म देते हैं किन्तु सद्गुरु इस देह में रहते विदेही आत्मा का साक्षात्कार करवाकर परब्रह्म परमात्मा में प्रतिष्ठित कर देते हैं ।

ऐसे सद्गुरु के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए, अपने जीवन में ज्ञान की प्रतिष्ठा करने के लिए, सद्गुरुदेव का पूजन-अर्चन करने का दिन है गुरुपूर्णिमा । गुरु की पूजा यह कोई व्यक्ति की पूजा नहीं है, व्यक्ति का आदर नहीं है, किन्तु गुरु की देह में जो विदेही आत्मा है, परब्रह्म परमात्मा हैं, उनका आदर है, ज्ञान का आदर है, ज्ञान का पूजन है ।

प्राचीन काल में भगवान वेदव्यासजी ने वेदों की व्यवस्था की । जीवों के कल्याण के लिए अठारह पुराणों एवं उपपुराणों की रचना की । भारतीय संस्कृति में ऐसे सत्पुरुष के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए आषाढ़ मास की पूर्णिमा को व्यासपूजन की प्रणाली का प्रारंभ हुआ । इस आषाढ़ मास की पूर्णिमा को ही व्यासपूर्णिमा, गुरुपूर्णिमा कहा गया ।

समस्त जलाशयों में जैसे सागर राजा है वैसे ही आध्यात्मिक जगत् के समस्त पर्वों में यह गुरुपूर्णिमा सर्वोच्च स्थान पर है । गुरुदेव के अमृतमय सान्निध्य में आकर, दर्शन-सत्संग द्वारा हृदय में ईश्वरीय प्रसाद पाये हुए सब साधक, भक्त, शिष्य जहाँ भी होते हैं वहाँ से इस दिन सद्गुरुदेव के दर्शनार्थ पहुँचने का प्रयास करते हैं । वर्ष भर की सेवा और साधना का पाठ पूरा करके, नये वर्ष में सेवा-साधना के नये संकेतों को ईशारों में समझकर आदर, अहोभाव एवं कृतकृत्यतापूर्ण हृदय से गुरुदेव के दर्शन करके नये आध्यात्मिक वर्ष का शुभारंभ करते हैं ।

सद्गुरु के ऐसे लाखों-लाखों प्यारे साधकों, शिष्यों, भक्तों की व्यवस्था करने के लिए गुरुपूर्णिमा से दो महीने पहले वैशाख मास की पूनम को, हृषिकेश के आश्रम में पूज्यश्री के पावन प्रेरक सान्निध्य में, अखिल भारतीय श्री योग वेदान्त सेवा समिति की

बैठक हुई। महोत्सव के समय हजारों - हजारों साधकों के रात्रिनिवास, भोजन, जल तथा सत्संग एवं गुरुदर्शन की व्यवस्था के संदर्भ में विचार-विमर्श किया गया । व्यवस्था की तैयारी के लिए समिति की गुजरातभर की शाखाओं में से ३०० जितने सेवक दस दिन पूर्व से ही अहमदाबाद के आश्रम में पहुँचकर निष्ठापूर्वक सेवा में लग गये थे । समस्त व्यवस्था में मुख्य सामना वर्षा से करना था क्योंकि गुजरातभर में पिछले २१ दिनों से निरंतर वर्षा हो रही थी । फिर भी उत्साही सेवाधारियों के चेहरों पर आनंद एवं उत्साह की झलकें दिख रही थी । तन-बदन में हिम्मत और साहस का संचार हो रहा था । आश्रम में पूज्यश्री का प्रत्यक्ष सान्निध्य सबके हृदयों में प्रेरणा-पीयूष का सिंचन कर रहा था ।

आश्रम में आवास-व्यवस्था के अलावा आश्रम के पास में स्थित गुजरात क्रिकेट स्टेडियम में, नारी उत्थान आश्रम में एवं मैदानों में ताड़पत्रियों से निर्मित शामियानों में साधकों के निवास की व्यवस्था की गई । दस हजार भक्त एक साथ बैठकर भोजन-प्रसाद ले सकें, ऐसा एक ताड़पत्री का विशाल पंडाल भी निर्मित किया गया । पीने के पानी की छः बड़ी प्याऊ, प्रातःकाल नित्यकर्म के लिए कामचलाऊ सैकड़ों शौचालय-स्नानागार भी बनाये गये । वाहनों के लिए पार्किंग की व्यवस्था भी की गई ।

ऐसे विशाल आयोजनों के समय जेबकतरों की टोलियाँ भीड़ में घुस जाती हैं । उनके लिए आश्रम के स्वयंसेवकों की एक इन्टेलीजेन्स टीम बनाई गयी । इस टीम ने इतनी कुशलता से काम किया कि करीब डेढ़ लाख दर्शनार्थी पूज्यश्री के दर्शन का लाभ लेने आये फिर भी जेब काटने की कोई घटना न घटी । जेबकतरों के जेब खाली ही रह गये ।

वाहनों की कतार इतनी लम्बी हुई कि आश्रम से लेकर साबरमती टोलनाके तक अर्थात् सवा दो किलोमीटर तक पहुँची। पार्किंग व्यवस्था के स्वयंसेवकों की सेवाएँ भी सराहनीय रहीं । प्राथमिक चिकित्सा की सेवा के लिए रुके संनिष्ठ डॉक्टरों के भाग में कोई सेवा न आ सकी ।

गुरुपूनम के दिन ब्राह्ममुहूर्त से भी पहले, दो बजे से भक्तों के काफिले का आश्रम आना शुरू हो गया । बारिश भी चालू थी । सवा चार बजे तक तो आश्रम का प्रांगण भक्तों से भर गया । फिर मुख्य द्वार को बंद करके प्रवेश के लिए बाहर कतार में खड़े रखने की व्यवस्था शुरू हो गई ।

पूज्य गुरुदेव भी सुबह जल्दी पाँच बजे व्यास-भवन में पधारे । आनंद की वर्षा शुरू हो गई । गुरुभक्तों ने पूज्यश्री के मंगल दर्शन करके, नयनों से प्रवाहित आत्मअमृत का पान करके धन्यता का अनुभव किया । निरंतर दो घण्टे तक ध्यान, सत्संग और कीर्तन की मधुर रिमझिम चलती रही । फिर सात बजे से दर्शन की लाईनें शुरू कर दी गयीं । आश्रम के मुख्य प्रवेशद्वार से लेकर गुजरात क्रिकेट स्टेडियम के गेट तक अर्थात् एक किलोमीटर तक की भाइयों एवं बहनों की लम्बी लाइनें लगी हुई थीं । किन्तु भक्तों का धैर्य एवं अनुशासन भी अद्भुत था ! सेना को भी अनुशासन में शरमाना पड़े और यह तो फिर स्वयंभू अनुशासन ! सद्गुरु के प्रति प्रेम, आदर एवं अहोभाव से सराबोर अनुशासन !

आश्रम के स्वयंसेवक भी सेवा में एकदम तत्पर थे । शाम तक इस प्रकार दर्शन का कार्यक्रम चलता रहा । प्रत्येक भक्त को हलवे का प्रसाद दौनों में दिया जाता । लगभग डेढ़ लाख भक्तों ने इस दिन गुरुदर्शन का लाभ लिया । यह तो मात्र अहमदाबाद के आश्रम में आये हुए भक्तों की बात हुई । भारत तथा विदेश में पूज्यश्री के अन्य आश्रमों एवं ४५० से भी अधिक सत्संग केन्द्रों पर भी गुरुपूर्णिमा के उत्सव का आयोजन हुआ । कई आश्रमों में पू. बापू ने टेलिफोन पर भक्त-समूहों को गुरुपूर्णिमा का सत्संग-संदेश दिया था ।

गुरुदर्शन के बाद तमाम भक्तों ने पंडाल में महाप्रसाद-भोजन का लाभ लिया । इतने बड़े आयोजन

में केवल १८०० स्वयंसेवकों ने ही पूरी व्यवस्था संभाली थी । महोत्सव के आयोजन की व्यवस्था देखकर दूरदर्शन एवं आकाशवाणीवाले भी मुग्ध हो गये कि ऐसी चालू वर्षा और कीचड़वाले वातावरण में भी लाखों लोग कितने अद्‌भुत आंतरसुख में सराबोर होकर आनंदोत्सव मना रहे हैं ! जिनके आध्यात्मिक प्रसाद से ये लोग परम सुखी हो रहे हैं, ऐसे ब्रह्मवेत्ता पू. बापू जैसे संतों के प्रेरक एवं पोषक मार्गदर्शन एवं सान्निध्य में ही देश का वास्तविक कल्याण हो सकता है। ऐसे सत्पुरुषों की उपस्थिति मात्र से मानव-मानव के बीच भाईचारा, एकता, अखंडता, सुख-शांति एवं समृद्धि अनायास ही आ जाती है । ईश्वर से यही प्रार्थना है कि हमारे देश में ऐसे सच्चे संतों, सत्पुरुषों का अवतार होता रहे एवं उनके अमृतमय सान्निध्य में हम सबका कल्याण होता रहे...

गुरुपूर्णिमा महोत्सव के बाद पूज्यश्री एक सप्ताह तक आश्रम में ही रहे । सुबह साढ़े पाँच बजे से शुरू होती प्रातःसंध्या, मध्याह्नकालीन संध्या एवं शाम को सत्संग में पूज्यश्री का सान्निध्य मिलता रहा । उसके पश्चात् दिनांक : २९-७-९४ के दिन पूज्यश्री एकांतवास के लिए प्रस्थान कर गये ।

❀

अमझेरा : विन्ध्याचल की सुरम्य पर्वत शृंखलाओं एवं मालवा के पठार में बसे अमझेरा (म.प्र.) धर्मक्षेत्र के वनवासी एवं कृषक ग्रामों में दिनांक ९ से १२ जुलाई ९४ तक आश्रम की साध्वी बहनों द्वारा पूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी के प्रचार का आयोजन किया गया जिसमें अमझेरा, दसाई, धार, बड़ोदिया, बलेड़ी, खकरोड़, चालनी, राजपुरा, सुल्तानपुर, बोदवाड़ा, बांदेड़ी, खिलेड़ी, हातोद, मोरगाँव, नयापुरा एवं जलोखिया जैसे वनवासी एवं कृषक ग्रामों में सीता बहन के सत्संग का आयोजन रखा गया । सीता बहन ने गुरुदेव की अमृतवाणी से सैकड़ों दिलों को तृप्त करते हुए व्यसनों व सामाजिक कुरीतियों से दूर रहने का आवाहन किया ।

भोले-भाले वनवासी पहली बार प्रभुनाम की महान् महिमा को जानने के लिये बरसते हुए पानी में भी देर रात तक सड़कों पर बैठे रहे । अमझेरा समिति के युवा साधकों के इस आयोजन में अहमदाबाद आश्रम की साध्वी बहनों द्वारा निर्धन वनवासियों में पैसा तथा मिठाइयाँ वितरित की गई ।

क्षेत्र की शाला के विद्यार्थियों ने साध्वी बहनों के सत्संग व कीर्तन का हर्षोल्लास के साथ लाभ लेते हुए स्मरणशक्ति बढ़ाने के लिये आसन-प्राणायाम की विधियाँ सीखी । वनवासियों ने सच्चे हृदय से प्रभु की प्रार्थना करने, कुरीतियों, व्यसनों से दूर रहने तथा अपने ही धर्म में जीने-मरने का संकल्प लिया ।

धन्य हैं वे साध्वी बहनें, जो स्वयं भीषण वर्षा के मध्य भीगती हुई भी देर रात्रि तक सद्‌गुरुदेव की पीयूषवर्षी वाणी का सुदूरवर्ती ग्रामों में प्रचारप्रसार कर वनवासियों को प्रभुमार्ग की प्रेरणा देती रही ।

देवास (म.प्र.) : पूज्यपाद सद्‌गुरुदेव की सत्प्रेरणा से देवास समिति द्वारा १९९३-९४ के वर्ष से निम्न सेवाकार्य निरंतर जारी हैं : (१) 'ऋषि प्रसाद' के सदस्य दिन प्रतिदिन बढ़ाये जा रहे हैं । अभी कुल सदस्य ५५० हैं । (२) विडियो लायब्रेरी द्वारा डिस्क पर चलाने हेतु विडियो कैसेट दी जाती है । इस प्रकार हररोज १० से १५ हजार लोग पूज्यश्री के सत्संग का लाभ लेते हैं । (३) हर रविवार एवं बुधवार विडियो सत्संग का कार्यक्रम नियमित रूप से जारी है । (४) आश्रम के द्वारा सत्साहित्य, संतकृपा चूर्ण, अगरबत्ती आदि का विक्रय चल रहा है । (५) हर महीने के प्रथम रविवार को भव्य प्रभातफेरी निकाली जाती है । (६) देवास में गर्मियों में पहली बार विशाल प्याऊ लगाकर लाखों लोगों को ठण्डे पानी का लाभ पहुँचाया गया । सप्ताह में तीन दिन छाछ का वितरण भी होता था । (७) हर वर्ष पूज्यश्री का जन्म-महोत्सव एवं आत्म-साक्षात्कार दिन बड़ी धूमधाम से विशेष रूप से समारोहपूर्वक मनाया जाता है । (८) पिछले

तीन-चार सालों से साधकों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। (९) महिला आश्रम, अहमदाबाद से आयी बहनों का ग्रामीण क्षेत्र में सत्संग, कीर्तन, ध्यान का कार्यक्रम अच्छी प्रकार चला। इससे गाँवों के लोगों में खूब आनन्द मंगल हो रहा। (१०) गत वर्ष दिनांक ८ से ११ अक्तूबर '९३ के दौरान देवास की जनता को पूज्यश्री के सत्संग समारोह का विशेष लाभ हुआ। मुस्लिम एवं बोहरा समाज में भक्तिभावपूर्वक पूज्यश्री की सराहना की गई। जनता फिर से पूज्यश्री के सत्संग की माँग कर रही है। (११) भविष्य में देवास समिति की योजना है कि देवास जिले के छोटे-बड़े सब नगरों एवं गाँवों में जाकर प्रभातफेरी एवं विडियो सत्संग का ज्यादा से ज्यादा लाभ पहुँचाया जाय।

इन्दौर आश्रम में गुरुपूर्णिमा महोत्सव बहुत ही आनन्द-उल्हास के साथ मनाया गया। पूज्यपाद सद्गुरुदेव ने अहमदाबाद आश्रम से टेलिफोन पर परम हितकारी व उत्साहवर्धक पावन सन्देश दिया। बरसात के बावजूद भी प्रभातकाल में इन्दौर नगर में निकाली गई हरिनाम-संकीर्तन यात्रा में असंख्य लोग आनन्द एवं उत्साह के साथ शरीक हुए थे। करीब ३००० साधकों ने पूज्यश्री के सन्देश व सत्संग का लाभ लिया था।

दिनांक : ७-८-९४ के दिन इन्दौर आश्रम की दिवंगत संचालिका श्रीमती गायत्रीदेवी प्रसाद (चाची) की पुण्यतिथि मनायी गई और साधकों ने उन्हें भाव-पुष्प के साथ श्रद्धांजलि अर्पित की। उनके निमित्त भोजन, वस्त्रादि के साथ दक्षिणा देकर दान-पुण्य किया गया।

श्रीमती गायत्रीदेवी प्रसाद (चाची) बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना करनेवाले महामना मदनमोहन मालवियाजी की पोती थी। उनके पति स्वाधीन भारत के डाक-तार विभाग के महानिर्देशक श्री प्रसादजी के पुत्र थे। वे दोनों प्रारम्भ से ही केनेड़ा में स्थायी हुए थे। चाची वहाँ आखिर में सोशल सेवा, केनेड़ा के संचालक पद पर से निवृत्त हुई थी। केनेड़ा की जनता के लिए सेवा कार्यों में संलग्न चाची केनेड़ा पधारे हुए सद्गुरुदेव के सान्निध्य में आयीं और तत्काल महसूस किया कि वास्तविक कल्याण तो इन ब्रह्मवेत्ता सत्पुरुष के बताये हुए आध्यात्मिक मार्ग की साधना में ही है। अतः उन्होंने १९८७ में सुरत आश्रम में पूज्यश्री से मंत्रदीक्षा प्राप्त की। केनेड़ा का अपना सारा कार्यभार समेटकर अहमदाबाद आश्रम में समर्पित हो गई। फिर इन्दौर आश्रम की सेवा संभाल ली। संत-निवास, नारायण धाम एवं साधक कुटीरों का निर्माण करके अपने २१ कुल रोशन किये। चाची सात्त्विक बुद्धिमता, उदारता, सौजन्य, विवेक-विचार एवं सद्गुरु के चरणों में समर्पण आदि दैवी गुणों से विभूषित थी। तन, मन, धन से निष्काम सेवा और आत्मकल्याण करके वे साधकों के लिए अनुकरणीय पदचिह्न छोड़ गयी हैं। उनकी पुण्यतिथि पर तमाम साधक परिवार की ओर से उन्हें भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित है।

ग्वालियर में संत श्री आसारामजी सत्संग मंडल की सत्प्रवृत्तियाँ

(१) प्रत्येक रविवार के दिन ऑडियो-विडियो कैसेट-सत्संग, भजन-कीर्तन, ध्यान, श्रीआसारामायण का पाठ, आरती एवं प्रसाद वितरण के साथ सत्संग कार्यक्रम मंडल कार्यालय, ६५, विकास नगर, ग्वालियर-२ में आयोजित होता है। साप्ताहिक सत्संग की जानकारी स्थानीय दैनिक समाचार पत्रों में दी जाती है। (२) डिस्क केन्द्रों पर से भी जनता को पूज्यश्री की विडियो कैसेट सत्संग का लाभ पहुँचाया जाता है। (३) समय-समय पर शहर के मुख्य धार्मिक स्थलों पर सत्साहित्य बिक्री केन्द्र खड़े करके पूज्यश्री के पावन सन्देश का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। (४) पूज्यश्री के जन्म-महोत्सव पर ग्वालियर के कुष्ठ आश्रम में दर्दियों को भोजन-प्रसाद दिया गया। कुष्ठ आश्रम को पूज्यश्री की ऑडियो कैसेट्स एवं चित्र भेंट किया गया। (५) जून के दूसरे सप्ताह

में पूज्यश्री के कृपापात्र साधक शिष्य श्री सुरेशानन्दजी के सत्संग-प्रवचन विभिन्न स्थानों पर आयोजित किये गये एवं रतलाम सत्संग मंडल के सहयोग से प्रभातफेरी हरि-संकीर्तन-यात्राएँ निकाली गई । (६) अन्य संतों के सत्संग कार्यक्रमों के दौरान भी पूज्यश्री का सत्साहित्य बिक्री केन्द्र खड़ा करके जनता को लाभान्वित किया जाता है ।

भीलवाड़ा (राज.) में संत श्री आसारामजी सत्साहित्य केन्द्र का शुभारंभ

दिनांक : ५ जून '९४ के दिन भीलवाड़ा में बाजार नं.२ में स्थित श्री जयलक्ष्मी ट्रान्सपोर्ट कंपनी पर संत श्री आसारामजी सत्साहित्य केन्द्र का उद्घाटन भाजपा के विधायक श्री जगदीशचंद्र दरक के द्वारा किया गया । आयोजित समारोह में श्री दरक ने कहा कि श्री आसारामजी बापू केवल भारत में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में आज तेजी से धर्मप्रेमी श्रद्धालुओं के हृदय-सम्राट बनते जा रहे हैं । उनकी अमृतवाणी से लाखों-लाखों लोग लाभान्वित हो रहे हैं ।

श्री योग वेदान्त सेवा समिति, भीलवाड़ा द्वारा प्रारंभ किये गये इस केन्द्र पर से जनता को पूज्यश्री की ऑडियो-विडियो कैसेट्स, सत्साहित्य, संतकृपा चूर्ण, विद्यार्थियों के लिए आश्रम से प्रकाशित, रियायती मूल्य पर वितरित सुपर डीलक्स कापियाँ आदि उपलब्ध होता रहेगा । रविवार को सुबह भव्य प्रभातफेरी, विडियो सत्संग का भी आयोजन किया गया ।

गोंदरा छिन्दवाड़ा (म.प्र.) के पास का ग्राम । है तो छोटा-सा लेकिन श्रद्धालु भाई-बहनों की क्या तो श्रद्धा-भक्ति ! पूज्यश्री के जन्म-महोत्सव पर श्रीआसारामायण का १०८ बार पाठ एवं २४ घंटे तक अखण्ड हरिनाम संकीर्तन ! नगर में शोभायात्रा व प्रभातफेरी निकाली तथा नगर-भोज का कार्यक्रम भी रखा गया जिसमें आसपास के गाँवों के भी हजारों लोगों ने प्रसाद पाया । अद्भुत है भगवान एवं धन्य हैं उनके रस में प्लावित भक्त !

मन्दसौर श्री योग वेदान्त सेवा समिति के द्वारा अप्रैल ९४ में मन्दसौर जिले में विभिन्न स्थानों पर पू. बापू के विडियो सत्संग, भजन, कीर्तन, ध्यान के कार्यक्रम सम्पन्न हुए । प्रत्येक बुधवार के दिन श्रीमती प्रभा मैनारीया के निवास रामटैकरी, मन्दसौर में एवं प्रत्येक सोमवार को श्रीमती मनोरमा गौड़ के निवास सुदामा नगर, मन्दसौर में, अन्य कई साधकों के यहाँ एक-एक दिन का सत्संग रखा गया ।

मल्हारगढ़ में १ मई के दिन पूज्यपाद सद्गुरुदेव के ५३ वें जन्मदिन महोत्सव के उपलक्ष्य में प्रातः ६ से दोपहर १२ बजे तक नगर के प्रमुख मार्गों से विशाल प्रभातफेरी संकीर्तनयात्रा निकाली गई ।

बेन्ड-बाजों के साथ साधक भाई-बहनों के द्वारा हरिनाम-संकीर्तन, भजन-पाठ नृत्य के साथ होता रहा । पूरा मल्हारगढ़ नगर नामस्मरण, कीर्तन में मानो डूब गया, आनन्द से सराबोर हो गया ।

वींछीया गाँव (जि. राजकोट, गुज.) में संनिष्ठ साधक सत्प्रवृत्तियों में संलग्न हैं । उस छोटे-से गाँव में हर शुक्रवार को विडियो सत्संग होता है । पूर्णिमा को प्रभातफेरी निकाली जाती है । दीवालों पर पू. बापू के सुवाक्यों का लेखन, सत्साहित्य का वितरण एवं 'ऋषि प्रसाद' के नये सदस्यों के नाम लिखने का कार्य भी होता है ।

कुबेरनगर (अहमदाबाद) योग वेदांत सेवा समिति की तरफ से जनता की सेवाप्रवृत्तियाँ चल रही हैं : (१.) जरूरतमंद लोगों को गेहूँ, चावल आदि अनाज की सहायता दी जाती है । (२) किसीकी झोंपड़ी या छप्पर गिर गया हो तो बना दिया जाता है । कामचलाऊ ताड़पत्री के तम्बू भी बना दिये जाते हैं । (३) विधवा बहनों को सिलाई मशीन जैसे रोजी-रोटी कमाने के काम में आनेवाले साधन भी दिये जाते हैं । (४) गरीबों को रोजी-रोटी दिलवाने एवं नौकरी-धंधे में लगाने का कार्य भी किया जाता है । (५) हर रविवार को भाइयों के लिए एवं

गुरुवार को बहनों के लिए सत्संग कार्यक्रम की व्यवस्था की जाती है। (६) सप्ताह में तीन बार डिस्क केबल पर विडियो सत्संग की व्यवस्था की जाती है । (७) कौटुम्बिक झगडों में बीच-बचाव करके सुलह करवाकर ऐसे झगड़ों का निबटारा किया जाता है । (८) जरूरतमंद बालकों को बिना मूल्य के पुस्तकें एवं स्कूल की फीस उपलब्ध करायी जाती है। (९) गरीब रोगियों को ठीक करने के लिए देशी दवाएँ निःशुल्क उपलब्ध करायी जाती हैं। (१०) महीने में दो बार... हर पूर्णिमा एवं दूज के दिन प्रभातफेरी निकाली जाती है । (११) गीता एवं श्रीआसारामायण का पाठ करवाया जाता है ।

(पेज २० से जारी...)

'मैं तुम्हें अभिषिक्त कर रहा हूँ, पावमानी ऋचाओं के अधिष्ठाता देवता तुम्हें पवित्र करें। महाराजा वरुण, भगवान् .सूर्य, बृहस्पति, इन्द्र, वायु तथा सप्तर्षिगण अपने-अपने तेज का तुममें आधान करें। तुम्हारे केशों, सीमन्त, मस्तक, ललाट, कानों एवं आँखों में जो भी दौर्भाग्य है, उसको ये अप् देवता नष्ट करें ।'

(उत्तर पर्व : १४४.१२-२४)

फिर दक्षिण हाथ में कुशा ग्रहण कर सरसों के तेल से मित, सम्मित, साल, कालकंटक, कूष्माण्ड, राजपुत्र के अन्त में स्वाहा समन्वित कर हवन करें ।

चतुष्पथ पर कुश बिछाकर सूप में इनके निमित्त बलि-नैवेद्य अर्पण करें । खिले हुए फूल तथा दूर्वा से अर्घ्य दें । मण्डल में अर्घ्य प्रदान कर विनायक की माता अम्बिका की पूजा करें और यह प्रार्थना करे : 'मातः ! आप मुझे रूप, यश, ऐश्वर्य, पुत्र तथा धन प्रदान करें और मेरी समस्त कामनाओं को पूर्ण करें । अन्नतर सफेद वस्त्र, सफेद माला और सफेद चन्दन धारण कर ब्राह्मण को भोजन कराएँ एवं गुरु को दो वस्त्र प्रदान करें ।

इस प्रकार ग्रहों और विनायक की विधिपूर्वक पूजा करने से सम्पूर्ण कर्मों के फल की प्राप्ति हो जाती है। भगवान सूर्य, कार्तिकेय एवं महागणपति की पूजा करके मनुष्य सभी सिद्धियाँ प्राप्त कर लेता है ।

(भविष्यपुराण : अध्याय १४४ में से उद्धृत)

'ऋषि प्रसाद' के

ग्राहक सदस्यों को सूचना

खास ध्यान दें : (१) 'ऋषि प्रसाद' के सदस्य बनते समय आप अपना पता संपूर्ण एवं स्वच्छ अक्षरों में लिखें या लिखावें। (२) रसीद बुक में अपना पता लिखाने के बाद Duplicate Receipt प्राप्त करके अपना पता चेक कर लें । (३) आप अगर पुराने सदस्य हों तो आपका पुराना सदस्य क्रमांक लिखना अनिवार्य है । इससे कम्प्युटर में से आपका एकाउन्ट हमें शीघ्र प्राप्त हो सकेगा । आपकी सेवा हम बिना विलंब, क्षमतापूर्ण रीति से कर पाएँगे । (४) अगर आपको चालू अंक प्राप्त हो सकता हो तो लेना भूलें नहीं । चालू अंक अप्राप्य हो तो दो महीने के बाद नया अंक आपको न मिले तो ही कार्यालय में संपर्क करें । याद रहे कि हमारा 'ऋषि प्रसाद' सामयिक द्विमासिक है, मासिक नहीं है । (५) अंक नहीं मिलने की शिकायत अंक के प्रकाशन-महीने की दिनांक २५ के बाद ही करें। तब तक आपको पोस्ट का इन्तज़ार करना होगा । (६) अगर आपका पता बदलवाना हो तो एक महीना पूर्व ही कार्यालय को सूचना देवें। अन्यथा आपको उस महीने का अंक पुराने पते पर से ही प्राप्त करना होगा । (७) 'ऋषि प्रसाद' का सदस्य शुल्क केवल वार्षिक या आजीवन का ही लिया जाता है, दो वर्ष या तीन वर्ष का नहीं । (८) सदस्य शुल्क Cash, M.O. या Draft द्वारा लिया जाता है । चेक लिये नहीं जाते ।

चालू बारिश में दोपहर के तीन बजे से रात्रि के नौ बजे तक हरिनाम-संकीर्तन यात्रा में हरिनाम की मस्ती लूटते भावनगर के हजारों-हजारों हरिभक्त... बाहर से मेघ बरसें और भीतर से हरिरस का आनंद... धन्य हैं समाज में सात्त्विकता फैलानेवाले आत्म-उद्धारक तपस्वी-जन !

(गुजरात समाचार दैनिक)

संत श्री आसारामजी बापू द्वारा प्रेरित भव्य हरिनाम संकीर्तन यात्रा

भावनगर दिनांक : २०-७-९४

आगामी गुरुपूर्णिमा पर्व के निमित्त से पूज्य संत श्री आसारामजी बापू के साधकों ने हरिनाम-संकीर्तनयात्रा निकाली थी, जिसमें राजकोट, गोंडल, जेतपुर, महुवा, तळाजा के साधक भी सम्मिलित हुए थे । संकीर्तनयात्रा मोतीबाग टाऊनहॉल से दोपहर के ३-०० बजे से शुरू होकर शहर के मुख्य मार्गों पर घूमकर रात्रि के ९-०० बजे मोतीबाग में ही पूर्ण हुई ।

इस संकीर्तनयात्रा में सौराष्ट्र तथा भावनगर के साधकों ने चालू बारिश में भी उत्साहपूर्वक कीर्तन करके लोगों में उत्साह एवं हरिभक्ति का रस जगाया था ।

इस विशाल भव्य संकीर्तनयात्रा में साधकों तथा धर्मप्रेमी भाई-बहनों की संख्या तीन हजार से भी ज्यादा थी । चालू बरसात में 'बहुजनहिताय-बहुजनसुखाय' के वचनों का उच्चारण करते, कीर्तन करते हुए लोगों में सनातनधर्म के प्रति श्रद्धा एवं भक्ति के गीत गुँजाये थे । इस संकीर्तनयात्रा से लोगों में सनातन धर्म के प्रति अद्‌भुत विश्वास, उत्साह और प्रेरणा जागी है ।

आश्रम के द्वारा दूर-सुदूर के निर्धन ग्राम्य क्षेत्रों में आयोजित बालभोज का एक दृश्य...

परमात्मा उन्हें आत्मशांति प्रदान करें...

ब्रह्मलोकगामी श्री नरेशजी ब्रह्मचारी ने पिता श्री सत्येन्द्रभाई त्रिवेदी एवं माता विमलाबहन के यहाँ दिनांक : २४-७-१९६१ के दिन जन्म लिया था। विज्ञान में स्नातक की उपाधि प्राप्त करके इस वीर विद्यार्थी ने नश्वर धन और भोग-विलास को अपनी विवेक-बुद्धि से क्षणभंगुर और तुच्छ समझा। अतः शाश्वत आत्मधन पाने के लिए अंतरंग साधना के मार्ग पर ले जानेवाले सद्गुरुदेव की शरण ली और साधना में आगे बढ़े । उन्होंने क्रमशः आध्यात्मिक ऊँचाइयों को छुआ । साधना के साथ ही साथ सच्ची लोकसेवा में भी संलग्न हुए । विद्यार्थियों को तेजस्वी बनने का उपदेश देते हुए, आम सत्संग सभाओं में गीता, भागवत, रामायण का सारगर्भित सन्देश एवं सद्गुरुदेव का ज्ञान-प्रसाद वितरित करते हुए इस कर्मयोगी, ध्यानयोगी, ज्ञानयोगी पथिक ने छोटी उम्र में बहुत कुछ आध्यात्मिक प्रसाद पाया और बाँटा । अपने माता-पिता एवं कुल का कुलदीपक होकर नाम रोशन किया । वे संयमी, सदाचारी व साधुस्वभाव के थे । शीघ्र ही आध्यात्मिक उन्नति के मार्ग में अग्रसर होते हुए वे अपने प्यारे गुरुभाइयों को भी उत्साहित करते थे । श्रेयस् मार्ग में वे इतने दृढ़निश्चयी थे कि उन्होंने कभी संसार के भोग-कीचड़ में जाने का स्वप्न तक नहीं देखा ।

अध्यात्म-मार्ग के ऐसे वीर पथिक श्री नरेशजी ब्रह्मचारी आज हमारे बीच नहीं रहे । जैसे गंगा की मझधार में ३२ वर्ष की उम्र में ही स्वामी रामतीर्थ की महासमाधि हो गई थी ऐसे ही श्री नरेशजी ब्रह्मचारी भी हृषिकेश में उसी गंगाधारा में दिनांक : ७-६-१९९४ के दिन अपनी नश्वर देह छोड़कर ब्रह्मलोकवासी हुए... महासमाधि को प्राप्त हुए ।

एकनिष्ठ अंतरंग साधना करते हुए, समाज और सद्गुरु के बीच एक सेतु बनकर सेवा करने का उनका सद्गुण अभी-भी संत श्री आसारामजी आश्रम के अंतेवासियों और लाखों साधकों को स्मरण में आ रहा है ।

धन्य हैं नरेशजी के माता-पिता और धन्य है नरेशजी का जीवन ! गुरुदेव के हृदय में वे अपनी जगह बनाकर, लाखों गुरुभाइयों की सेवा में सफल जीवन बिताकर वे हमारे समक्ष एक आदर्श साधक का नमूना छोड़ गये हैं। हम सभी आश्रमवासी उन वीर गुरुभाई को प्रेम व आदरपूर्वक भावपूर्ण श्रद्धांजलि दे रहे हैं ।

धन्य धन्य मात-पिता तुम्हारे गुरुकाज में जीवन उजियारे ।

गुरु की महिमा को जानकर उसका अनुभव करें और उनका प्रेमसंदेश मनुष्य जाति में फैलाएँ । इससे गुरु की कृपा तुम पर उतरेगी । • गुरु के प्रति कर्त्तव्यों में कभी विचलित न बनो । • गुरु की सेवा करते समय अपने आंतरिक उद्देश्य की जाँच करो । किसी भी प्रकार के फल, नाम, कीर्ति, सत्ता, धन आदि की आशा के बिना ही गुरु की सेवा करना चाहिए । • गुरुसेवा रूपी यज्ञ के पास और सब यज्ञ अल्प हैं ।

- स्वामी शिवानंदजी

हम भारत भर में घूमेंगे ।
हम गुरु संदेश सुनाएँगे ॥

दिनांक : ३१ जुलाई १९९४ के दिन हजारों हजारों हरिनाम के प्रेमियों की निकली हुई भव्य संकीर्तनयात्रा ने समग्र वापी (गुज.) को हरि के रंग में एवं भक्ति के रस में रममाण कर दिया...

प्रत्येक क्रिया, प्रत्येक व्यवहार, प्रत्येक प्राणी ब्रह्मस्वरूप दिखे यही सहज समाधि है ।

पू. बापू के अन्य सत्संग-कार्यक्रम

१. सुरत आश्रम में रक्षाबंधन महोत्सव
दिनांक : २१ अगस्त, १९९४
जन्माष्टमी सत्संग समारोह
दिनांक : २७, २८, २९ अगस्त, १९९४
जन्माष्टमी महोत्सव दिनांक : २९ अगस्त, १९९४
स्थान : संत श्री आसारामजी आश्रम, वरीयाव रोड़, जहांगीरपुरा, सुरत. फोन : ६८५३४१

२. बाँसवाड़ा (राज.) में गीता-भागवत सत्संग समारोह
दिनांक : १६ से १९ सितम्बर, १९९४
समय : सुबह ९ से ११ शाम ४ से ६
स्थान : कुशल बाग मैदान.

३. भीलवाड़ा (राज.) में गीता-भागवत सत्संग समारोह
दिनांक : २२ से २६ सितम्बर, १९९४
समय : सुबह ९ से ११ शाम ४ से ६
स्थान : नगर परिषद स्टेडियम.

४. उदयपुर (राज.) में गीता-भागवत सत्संग समारोह
दिनांक : ५ से ९ अक्तूबर, १९९४
समय : सुबह ९ से ११ शाम ४ से ६
स्थान : राजस्थान एग्रीकल्चर कॉलेज ग्राउन्ड, सूरज पोल के बाहर.

हे रघुनन्दन ! शास्त्रवेत्ता कहते हैं कि मन का इच्छारहित होना यही समाधि है क्योंकि इच्छाओं का त्याग करने से मन को जैसी शांति मिलती है ऐसी शांति सैकड़ों उपदेशों से भी नहीं मिलती । इच्छा की उत्पत्ति से जैसा दुःख प्राप्त होता है ऐसा दुःख तो नर्क में भी नहीं । इच्छाओं की शांति से जैसा सुख होता है ऐसा सुख स्वर्ग तो क्या ब्रह्मलोक में भी नहीं होता। इच्छामात्र दुःखदायी है । इच्छा का शमन मोक्ष है ।

- श्री वशिष्ठजी महाराज
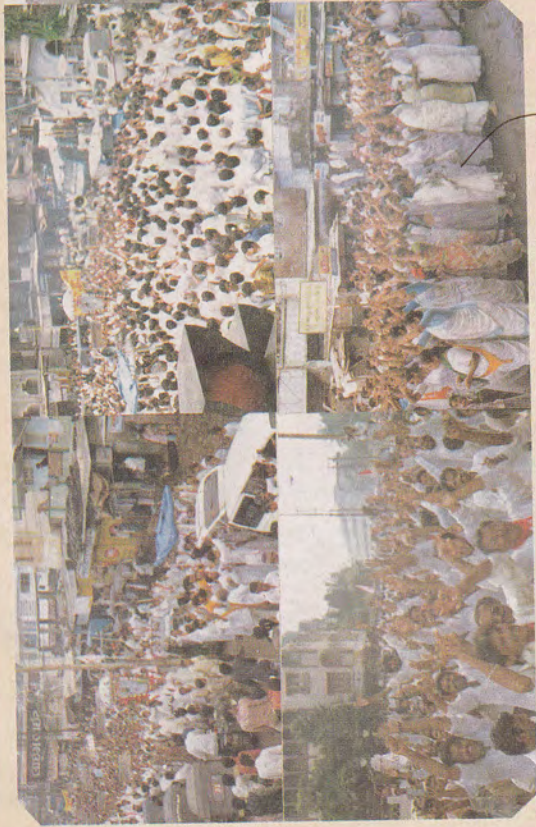
सुरत में दि. ३-७-'९४ को निकली हुई भव्य संकीर्तनयात्रा... प्रभुभक्ति में मस्त होते हुए भक्तों को निहारकर नैन ठारते हुए एवं हरिनाम सुनकर कान पावन करते हुए सुरत के लाखों लोग आनंदित दिखाई देते हैं...

देवास (म.प्र.) एवं पास के गाँवों में १०-१५ हजार लोग रोज विडियो सत्संग केन्द्र एवं केबल के माध्यम से पू. बापू के सत्संग का लाभ ले रहे हैं।

पूज्य गुरुदेव के जन्म-महोत्सव के प्रसंग पर बड़ौदा में संकीर्तनयात्रा में भक्तिरस में सराबोर होकर आनंद-उल्लासपूर्वक आगे बढ़ते हुए प्रभु के प्यारे साधक भाई-बहन। बड़ी तादाद में जुड़कर बड़ौदा की संत-भगवंतप्रेमी जनता अपने संस्कारप्रेम का परिचय दे रही है।

वापी (गुज.) में पू. बापू के विडियो सत्संग से लाभान्वित होते हुए भक्तजन...

संत श्री आसारामजी प्याऊ, देवास (म.प्र.)